वर्ष 6, अंक 8, इलाहाबाद मई 2008

विश्व स्नेह समाज

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

कीमत 5 रुपये

समाज के निर्माण में साहित्य का योगदान

क्या ऐसों को वोट देगे .....

पर्यावरण जागरूकता अभियानः २००७

ठोस अपशिष्ठ पदार्थो का प्रबंधन

आयोजकः गोकुल पब्लिक फाउन्डेशन सोसायटी

कार्यालयःएल.आई.जी-६३, नीमसरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद,उ०प्र० **email:** gpfsociety@rediffmail.com

हरे वृक्ष कर रहे गुहार, हमको रोपो बारम्बार।

वृक्ष लगाओ, देश बचाओ

मेरा (पालीथिन) तुम मत करो प्रयोग,

मैं हुँ एक भयंकर रोग।

अपशिष्ठ पदार्थो का तुम करो प्रबंधन,
इसमें ना रकखों कोई बंधन।

प्रायोजकः शोहरतगढ़ इन्वायरमेन्टल सोसायटी, शोहरतगढ़

नवभारती पब्लिक स्कूल

१८६बी/१, नागबासुकी मार्ग, दारागंज, इलाहाबाद

कक्षाः नर्सरी से आठ तक

पढ़ाई के साथ-साथ कम्प्यूटर की शिक्षा, बच्चों को सभी प्रकार की सुविधा, लाइट न होने पर जनरेटर की व्यवस्था

प्रधानाचार्या
ऊषारानी श्रीवास्तव

नोटःअनुभवी अध्यापिकाओं की आवश्यकता है।

विश्व स्नेह समाज
लोकप्रिय हिन्दी सामाजिक मासिक पत्रिका
मई 08

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

क्या सरकारी अस्पतालों में रूई व पट्टी भी नहीं?

सरकारी अस्पतालों में दवाएं नहीं, डॉक्टरों की दुआएं ही मिल जाएं यही बहुत है. जो सरकारी डॉक्टर अस्पताल में बैठकर मरीजों से ठीक से बातें तक नहीं करते वहीं डॉक्टर अपने निजी क्लीनिक में ऑखें चार किए बैठे रहते हैं. लेकिन प्राईवेट अस्पतालों/नर्सिंगहोमों, व क्लीनिक में इलाज कराना गरीबों के क्या, मध्यम वर्ग के भी बस की बात नहीं. सरकारी अस्पतालों में भर्ती मरीजों और उनके तीमारदारों की हमेशा शिकायत रहती है कि अस्पतालों में न तो डॉक्टर मिलते है और न दवा मिलती. साधारण बुखार और दर्द की दवा की तो बात ही छोड़िए रुई और पट्टी भी बाहर से लानी पड़ती है. यह शिकायत किसी एक शहर के सरकारी अस्पताल की नहीं बल्कि इलाहाबाद मंडल के सबसे बड़े अस्पताल स्वरुपरानी से लेकर राज्य के गॉव के छोटे से छोटे अस्पताल तक की है. चिकित्सकों का कहना है कि अस्पतालों में दवा का जो बजट पांच वर्ष पहले था, वही अब भी है. मरीजों की संख्या दोगुनी हो गई है, दवाएं मंहगी हो गई लेकिन बजट नहीं बढ़ा. कुछ जिलों के सीएमओ दफ्तर कें कर्मचारियों का कहना है कि ३५ फीसदी दवाएं खास लोगों के नौकर-गार्ड और परिचित ले जाते हैं. दवा के बजट से ही खास लोगों के घर हार्लिक्स, काम्पलान के डिब्बे जाते है. ताकत की दवाएं भी डिमांड में रहती है. ६५ फीसदी में २० फीसदी कमीशन निकल जाता है, दस फीसदी अस्पताल के कर्मचारी उठा ले जाते है.

आम आदमी अगर पर्ची के लेकर जाता है तो कहा जाता है दवा नहीं है, लेकिन वही दवा किसी सिफारिशी के बाद वहीं मिल जाती है. बड़े अस्पतालों के डॉक्टर भी वहीं दवा लिखते हैं जो अस्पताल में नहीं मिलती. उनका तर्क होता है कि वर्तमान में जो दवाएं सफल हैं, वही लिखते है.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

सम्पादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी—93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसीः 09335155949
ई—मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com
gokul_sneh@yahoo.com

आवश्यक सूचनाः

1.पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर 277/486, जेल रोड चक रघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

अंदर पढ़िए

प्रेरक प्रसंग— 4
क्या ऐसों को वोट देंगे— 5
जननायक हरिशंकर तिवारी— 7
विश्व की तीसरे नंवर की टीम—8
सभी प्रत्याशी मुझसे लड़ रहे है—9
हम राम रहीम को साथ लेकर..—10
समाज के निर्माण में साहित्य—11
शुभ मुहूर्त में ही शुरु करें नया काम—12
साहित्य मेला एक रिर्पोट— 13
ब्रहमर्षि राधेश्याम दूबे— 19
साहित्य समाचार— 20
व्यंग्य— 21
जानकारी—जीवन में रंग—23
अध्यात्म— 24
कहानी— 25
लघु कथा—27
चिट्ठी आई है— 28,
स्वास्थ्य— 32
जरा हंस दो मेरे भाय—33
समीक्षा— 34
कविताएं— 19, 20, 25, 26,30, 34

अपने विचारों को पवित्र रक्खो

अपने विचारों को पवित्र रखो. धर्म का समस्त तत्व इसी एक वाक्य में छिपा हुआ है. अन्याय विधान तो धर्म की भूमिका और शब्दाडंबर मात्र है. क्रोध, कटु भाषण, ईर्ष्या और लोभ से बचना यही तो धर्म प्राप्ति का मार्ग है. सदैव शुभकर्म करने में प्रवृत्त रहो. परोपकर के कार्यो में पूरी शक्ति और पूरा उत्साह लगाना यही तो कर्त्तव्य-पथ है. नेकी से बढ़कर न तो कोई धर्म है और न बदी से बढ़कर कोई पाप. यह मत पूछो कि धर्म से क्या लाभ है? जिज्ञासुओं! धर्म से उत्पन्न होने वाला सुख ही सच्चा सुख है. अन्य सुख तो विडंबना मात्र है. यदि तुम एक क्षण भी व्यर्थ खोए बिना जीवन भर नेक काम करते रहो तो निश्चय ही एक दिन जन्म मरण की फॉसी से छूट जाओगे. धर्म के पथ पर आरूढ़ होने में एक पल का भी विलंब मत लगाओ. आज से ही सेवामार्ग को अपना लो, ऐसा न हो कि कल करुंगा, सोचते-सोचते मृत्यु तुम्हारा गला दबा ले और जन्म-जन्मांतरो तक साथ रहने वाले धर्मरुपी अमर मित्र को प्राप्त करने से वंचित रह जाओ.

+++++++++++++++++++++++++

विद्या अध्ययन की कोई उम्र नहीं होती

कुएँ को जितना गहरा खोदा जाए, उसमें से उतना ही जल प्राप्त होता जाता है. जितना अधिक अध्ययन किया जाए, मनुष्य उतना ही ज्ञानवान बनता जाता है. विश्व क्या है? और इसमें कितनी आनंदमयी शक्ति भरी हुई है, इसे वही जान सकता है, जिसने विद्या पढ़ी है. ऐसी अनुपम संपत्ति को उपार्जन करने में न जाने क्यो लोग आलस्य करते हैं? आयु का कोई प्रश्न नहीं है, चाहे मनुष्य बुड्ढ़ा हो जाए या मरने के लिए चारपाई पर पड़ा हो हो तो भी विद्या प्राप्त करने में उसे उत्साहित होना चाहिए, क्योंकि ज्ञान, तो जन्म-जन्मोंतरो तक साथ जाने वाली वस्तु है.

साभारः रामपुर समाचार

आदाब अर्ज

वक़्त के साथ ख़ुद को चलाए रखिए,
कोई तोड़े तो भी रिश्तों को बनाए रखिए
फूल मुरझाने की जद में नहीं आता जब तक
ज़िदगी फूल है, गुलशन में सजाए रखिए।

बचपना उम्र का एक आलेख है,
औ जवानी जमाने का अभिलेख है,
घर गृहस्थी कठिन भी है आसान भी,
पर बुढ़ापा उमर का शिलालेख है।

रहता खुला है हाजिरी का काम होता है,
मौत का दफ्तर है सबका नाम होता है,
दौलत बटोर ले तू शोहरत बटोर ले,
पर कफ़न में जेब होती है न कोई नाम होता है।

मौत ने भेजा निमंत्रण है लिखा आना पड़ेगा,
मेरी शादी है ख़ुशी के गीत भी गाना पड़ेगा
जिंदगी ने कान में चुपके से मेरे ये कहा
बस इसी ही वक्त फ़ैरन ही मुझे जाना पड़ेगा।

कफन की आन लिखता हूँ, वतन की शान लिखता हूँ,
लहू की रौशनाई से ये, हिन्दुस्तान लिखता हूँ.

आग पानी हवा धरती औ गगन रख कर गए है,
इस चमन को सींचने वाला लहू रख कर गए हैं,
देश का कोई मुसाफिर फिर न भटके राह में,
हर गली, हर मोड़ पर जलता दिया रख कर गए हैं।

इस देश के वीर-शहीदों ने ख़ुद अपना ही इम्तेहान लिखा,
ख़ुद मान लिखा, सम्मान लिखा औ देश का फिर अभिमान लिखा,
भंगूरा बनने से पहले, ख़ुद नींव में अपनी देह धरी,
ख़ुद को नींव का पत्थर लिखी, ऊपर हिन्दुस्तान लिखा.

रक्त से अभिषेक हिम शिखरों का वे करके गए,
और निज जयघोष हिम शिखरों का वे करके गए,
इतिहास आज़ादी का स्याही से लिखा जाता नहीं,
इसलिए निज रक्त से जय-पत्र वे लिख के गए.

डॉ० सर्वदानन्द द्विवेदी, उन्नाव

क्या ऐसों को वोट देंगे?

कुछ राज्यों के चुनाव अभी हॉल ही सम्पन्न हुए है. उत्तर प्रदेश का चालू है और कुछ राज्यों के शीघ्र ही होने वाले हैं. लोकसभा के चुनाव भी ज्यादा दूर नहीं रह गए हैं. प्रत्याशी नये-नये वादों के साथ, नये-नये नारों के साथ मैदान में उतरने के लिए तैयार है. प्रत्याशियों के समर्थन में उनके चहेते फिल्मी सितारे, उनके चहेते मास्टर ब्लास्टर ताल ठोंककर मैदान में उतरने को तैयार है. जनता के धैर्य की परीक्षा, जनता के चयन की परीक्षा सभी कुछ दॉव पर है. पिछले पचास वर्षो से भारतवर्ष में लोकतंत्र की हत्या हो रही है. जो एक बार कुर्सी पर बैठ जाता है वह कुर्सी छोड़ना ही नहीं चाहता. प्रजातंत्र के नाम पर परिवार तंत्र का प्रभुत्व हावी है. लगभग सभी प्रांतो में एक ही नेता के प्रभावी परिवार का कब्जा पाया जाता है. हमारी संसद में भी पिछले पचास वर्षो से वही २००-२५० व्यक्ति बार-बार चुनकर आते है. केवल थोड़े से चेहरे मृत्यु के कारण ही बदलते है. इन परिस्थितियों में प्रश्न उठता है कि आप इनमें से किसको वोट देना पंसद करेंगें?

✍ क्या आप उस नेता को वोट देना चाहेंगे, जो अपनी रैली में भीड़ बढ़ाने के लिए स्कूलों के मासूम बच्चों को जबरदस्ती बुलवाता है. और मासूम बच्चे भयंकर गर्मी को सहन न करने के कारण बीमार और बेहोश हो जाते है. जिसके लिए स्कूली बच्चों का महत्व केवल रैली में भीड़ दिखाना है. जो मासूम बच्चों पर दया नहीं कर सकता.

✍क्या आप उसे वोट देना चाहेंगे, जो संसद में गाली-गलौज करता है. हाथापाई करता है और लोकतंत्र में संसद की मर्यादा को भंग करता है. ऐसा सांसद /विधायक जो घूसा तानकर, बल प्रयोग या शोर शराबा करके अपनी बात मनवाना चाहता है और दूसरों की बात को दबाना चाहता है.

✍क्या आप उसे वोट देना चाहेंगे, जो पिछले पचास वर्षो से लगातार सांसद/

विधायक बन रहा है. मगर अभी तक कोई भला कार्य नहीं किया. देशहित में कोई कार्य नहीं किया, जो झूठे वादे करता है और प्रत्येक बार अपनी जाति ताकत के बल पर आकर विधायिका या सांसद में बैठ जाता है.

✍क्या आप उसे वोट देना चाहेगें, जो प्रजातंत्र में विश्वास नहीं रखता, जो सपरिवार देश की राजनीति पर कब्जा करना चाहता है. जो स्वयं मंत्री है. भाई मंत्री है, पुत्र विधायक है, भतीजे और परिवार के अन्य सदस्य भी पूरी तरह राजनीति में छाये हुए है. जो अपने अतिरिक्त किसी अन्य को अवसर देना हीं नहीं चाहता.

✍क्या आप ऐसे व्यक्ति को वोट देना चाहेंगे, जो आरक्षण के नाम पर छात्रों को छात्रो से लड़वा रहा है. प्रतिभाओं को आत्महत्या और आत्मदाह करने के लिए प्रेरित कर रहा है, जो १०० अंक प्राप्त करने वाले के ऊपर ३३ अंक प्राप्त करने वाले को बैठाना चाहता है. जिसके कारण देश में दंगे भड़कने की आशंका हो, जो योग्यता की कीमत पर, देश को आरक्षण के नाम पर अयोग्य हाथों में सौंप देना चाहता है. क्या आप ऐसे व्यक्ति को वोट देना चाहेंगे, जिसके विरुद्ध व्यभिचार और अपहरण के मुकदमें लंबित है, जिसने अपना जीवन चम्बल के बीहड़ों में गुजारा है. जिसको यह नहीं पता कि संसद की मर्यादा क्या होती है अथवा सांसद के कर्तव्य क्या है.

✍क्या आप ऐसे व्यक्ति को वोट देना चाहेंगे, जो चारा-घोटाला, ताज-घोटाला, ताबूत-घोटाला स्टॅम्प घोटाला शेयर घोटाला अथवा अन्य किसी भी घोटाले में लिप्त है. और अपने प्रभाव से न जॉच को आगे बढ़ने दे रहा है और न हीं जॉच के बाद लम्बित मुकदमों को चलने दे रहा है. जिसके बारे में आप भली-भॉति जानते हैं कि घोटाले की आदत है. क्या आप ऐसे व्यक्ति को वोट देना चाहेंगें, जो राज्य के कोष से निज प्रसिध्दि करोड़ों रुपये विज्ञापन के नाम पर खराब कराता है और लाखों रुपये ताज-उत्सव में कार्यक्रम के नाम पर अपने चहेते व्यक्ति को दे देता है.

✍क्या आप ऐसे व्यक्ति को वोट देना चाहेंगें, जो सदैव केन्द्र सरकार को कोसता रहता है और पार्टी मुखिया होने के नाते अपनी कमियों को नहीं देखता. जनता का दुःख-दर्द नहीं समझता. अपने पैतृक निवास स्थान पर बिजली की सुविधा २४ घंटे रहने

✍समाज प्रवाह, मुंबई

का आयोजन करता है और सारे देश में बिजली की कटौती की घोषणा करता है. जो अपने गॉव में हेलीकॉप्टर सेवा आरंभ करना चाहता है. भले ही बहुत से गॉव रेल और बस सेवा से भी अछूते रहे हों.

क्या आप ऐसे व्यक्ति को वोट देना चाहेंगें, जिसके चरित्र के बारे में सभी लोग जानते हों. जिसका दामन पाक नहीं है तथा जो स्वयं को रसिक बताता है और अपने ऐसे किस्सों को उजागर होने से बचाने के लिए दूसरों पर दोषारोपण करता है. जो व्यक्ति बोफोर्स तोप के मामले में सच से कोसों दूर है, फिर भी राजनीति में अपने आपको सच्चा देश-भक्त साबित करने का प्रयास करता है. क्या आप ऐसे व्यक्ति को वोट देना चाहेंगें, जो भारत में एक और पाकिस्तान की स्थापना करना चाहता है और इसके लिए मुस्लिम प्रदेश की मॉग कर रहा है. इसी प्रकार जो व्यक्ति बिजनौर, मुरादाबाद, मेरठ, मुजफ्फरनगर, रामपुर, सहारनपुर आदि जिलों को लेकर एक नया मुस्लिम बहुल प्रदेश बनाना चाहता है. जबकि तथ्यात्मक रुप से इन जिलों में मुस्लिम जनसंख्या अधिक है. क्या आप ऐसे व्यक्ति को वोट देना चाहेंगें, जो दुबारा देश विभाजन की भूमिका बना रहा है तथा जो एक बार सांसद/विधायक चुने जाने से पूर्व जिसके पास १२ बीघे जमीन थी और चुने जाने के बाद १२,००० बीघे जमीन हो गयी.

क्या आप ऐसे व्यक्ति को वोट देना चाहेंगें, जो केवल मुसलमान को प्रांतीय मुख्यमंत्री बनाने के पक्ष में हो और यदि उसको इच्छित व्यक्ति प्रांत का मुख्यमंत्री बना दिया जाये तो कल को वह भारतवर्ष का प्रधानमंत्री भी किसी मुसलमान को ही बनाने का आग्रह करेगा. वह भी योग्यता या बहुमत के आधार पर नहीं बल्कि केवल जाति या वोट बैंक के आधार पर? नतीजा चाहे देश विभाजन हो या कौमी तंगदिली बढ़ें.

क्या आप ऐसे व्यक्ति को वोट देना चाहेंगें, जो चलते-फिरने में असमर्थ तथा बोलने में हकलाता हो. जो इतने बूढ़ हो चुके है कि अपने शरीर को संभाल नहीं पाता उन पर दया आती है.

क्या आप ऐसे व्यक्ति को वोट देना पसंद करेंगे, जो वंदेमातरम् गाये जाने के पक्ष में नहीं है तथा तुष्टिकरण के वशीभूत वंदेमातरम् को विद्यालयों में गाया जाना सबके लिए आवश्यक नहीं मानता. (यह ध्यान देने योग्य बात है कि देश में जितने भी मिशनरी स्कूल है, वहॉ ईसामसीह की प्रार्थना होती है)

क्या आप ऐसे व्यक्ति को वोट देना चाहेंगें, जो अमरनाथ यात्रियों और हज यात्रियों में अंतर करता हो. अमरनाथ यात्रियों के लिए कोई आर्थिक सहायता नहीं और हज यात्रियों के लिए आर्थिक सहायता को उचित मानता हो. इस प्रकार भेदभाव की भावना रखने वाला व्यक्ति क्या विधायिका में प्रवेश पाने का अधिकारी है.

क्या आप ऐसे व्यक्ति को वोट देना चाहेंगें, जो संसद में अथवा सांसद के बाहर अन्य राष्ट्रीय नेताओं पर अपमानजनक टिप्पणियॉ करता रहा है.

क्या आप ऐसे व्यक्ति को वोट देना चाहेंगें, जो गोधरा कांड पर तो श्रंद्धाजलि भी अर्पित न करें तथा प्रतिक्रिया स्वरुप में गुजरात में हुए दंगों पर सियापा कर शर्मिदगी का एहसास करे और देश के बहुसंख्यक लोगों के प्रति तिरस्कार पैदा करें.

क्या आप ऐसे व्यक्ति को वोट देना चाहेंगें, जो आंतकवादियों और अपहरणकर्ताओं के साथ हमदर्दी रखता है.

यह सभी बिन्दु वोट देने से पहले विचारणीय है. आज भी सरदार वल्लभ भाई पटेल, लाल बहादुर शास्त्री और रफी अहमद किदवई जैसे लोगों की कमी नहीं है. अगर जनता चाहे तो घोटालों में लिप्त, अपहरणकर्ताओं, व्यभिचारी, बाहुबलियों का बहिष्कार करके अच्छे व्यक्तियों को संसद में भेज सकती है. अन्यथा देश का उद्धार नहीं है. क्योंकि देश का वर्तमान नेता (एकाध अपवाद छोड़कर) अरबपति बनने की होड़ में देश को चूस रहा है. ऐसे से देश को मुक्त कराना क्या सहीं लोकतंत्र नहीं होगा.

सड़कों को गड्ढ़ायुक्त बनाने, अपराध/अपहरण को उद्योग का दर्जा देने, शिक्षा का स्तर गिराने, महिलाओं/लड़कियों को घर से निकलना बंद कराने, नकल को जन्मसिद्ध अधिकार घोषित करने, जातिवाद, धर्मवाद, सम्प्रदायवाद को बढ़ावा देने के लिए

भारतीय भ्रष्टाचार पार्टी

(बीबीपी) के उम्मीदवारों को वोट दीजिए

निवेदक,
दाऊजी

जी.पी.एफ.सोसायटी द्वारा जनहित में जारी

जननायक व विकास पुरूषः हरिशंकर तिवारी

१९७२ में प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य बनें श्री तिवारी १९८५ में चिल्लूपार से निर्दलीय विधायकी का चुनाव जीते. श्री तिवारी के राजनीतिक जीवन का सबसे आश्चर्यजनक पहलू यह है कि सत्ता में रहने, लालबत्ती पर चलते रहने के बावजूद उनके ऊपर कभी भी सत्ता के दुरुपयोग या भ्रष्टाचार का इल्जाम नहीं लगा. शिक्षा के जरिये ज्ञान और ज्ञान के जरिये आदमी के विकास की वकालत करने वाले श्री हरिशंकर तिवारी का कार्य उनके क्षेत्र की सड़के व अन्य विकास कार्य बोलते हैं. श्री तिवारी विनम्र, मृदुभाषी, शिक्षा का गुरु मंत्र,धोती—कुर्ता और माथे पर बड़ा टीका पहचान है.

टांडा के एक किसान के बेटे, १९८५ से लगातार छह बार गोरखपुर के चिल्लूपार विधानसभा क्षेत्र से जनता के प्रतिनिधि चुने जा रहे ६७वर्षीय हरिशंकर तिवारी का नाम सुनते ही लोग रायफल की धांय-धांय की कल्पना करने लगते हैं. लेकिन उनके क्षेत्र की जनता, उनको नजदीक से जानने वाले, उनके सम्पर्क में आने वाले इस शख्सियत की पहचान शिक्षानायक व विकासनायक के रुप में करते हैं. लगभग दो दर्जन से भी अधिक विद्यालयों के प्रबंधक होने के साथ ही साथ, सबसे महत्वपूर्ण गौरव यह हासिल है कि वह जिस स्कूल में पढ़े आज उसी स्कूल के प्रबंधक है और गुरु दक्षिणा के रुप में उस स्कूल में महाविद्यालय का दर्जा दिलवा दिया. इतना ही नहीं गरीब छात्रों की फीस भरने के साथ ही साथ किताबों तक की व्यवस्था पर्दे के पीछे से करते हैं. जनता के चहेते इतने की क्षेत्र के बच्चे-बाबा, हमका इ चाही.. ..' कहने को स्वतंत्र है और बाबा उन बच्चों की ख्वाहिश पूरी भी करते हैं. सामंती अत्याचार का प्रतिकार करने के कारण छात्र जीवन में उनके नाम के आगे माफिया डान शब्द जुड़ गया. छात्र जीवन से लेकर आज की तारिख तक श्री तिवारी पर एक भी आपराधिक मुकद्मा दर्ज नहीं है. बाहुबली के नाम से आहत श्री तिवारी विनम्र, मृदुभाषी, शिक्षा का गुरु मंत्र, धोती-कुर्ता और माथे पर बड़ा टीका पहचान है. फोन पर गायत्री मंत्र की गूंज, पूर्व प्रधानमंत्रियों राजीव गांधी और अटल बिहारी वाजपेयी के उन पर वरदस्त को दर्शाती उनके कमरे में लगी फोटुंए इस बात की गवाह है कि इस व्यक्ति

ने कला-कौशल से अपने को राजनीतिक शख्सियत बनाया.

माफिया डान की छवि को अपनी ढाल बनाने वाले श्री तिवारी समाजशास्त्र से परास्नातक करने के बाद अपने आभामंडल का दायरा और बढ़ाने के लिए राजनीति में कदम रक्खे और १९७२ में प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य बनें. १९८५ में कांग्रेस से टिकट न मिलने पर वह चिल्लूपार से निर्दलीय विधायकी का चुनाव लड़े और विजयी रहे. इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा. पार्टिया तो बदली मगर क्षेत्र नहीं बदला, और न क्षेत्र की जनता ने अपना प्रतिनिधि बदला. चुनाव की लहर, हवा चाहे जिस तरफ बही हो, सारी हवाए उनसे टकराने से पहले से अपना रुख बदलती रहीं. लोकतांत्रिक कांग्रेस के खेवनहार श्री तिवारी पर यह भी आरोप लगा कि वे सत्ता के साथ रहते है. इस पर श्री तिवारी का कहना है कि जनता का अरबो रुपये बार-बार उड़ाने का औचित्य क्या है? इसीलिए वह सरकारों को समर्थन देने में गुरेज नहीं करते. श्री तिवारी के राजनीतिक जीवन का सबसे आश्चर्यजनक पहलू यह है कि सत्ता में रहने, लालबत्ती पर चलते रहने के बावजूद उनके ऊपर कभी भी सत्ता के दुरुपयोग या भ्रष्टाचार का इल्जाम नहीं लगा. शिक्षा के जरिये ज्ञान और ज्ञान के जरिये आदमी के विकास की वकालत करने वाले श्री हरिशंकर तिवारी का कार्य उनके क्षेत्र की सड़के व अन्य विकास कार्य बोलते हैं. उन्होंने अपने क्षेत्र की जनता के आशा अनुरुप वह सब कुछ दिया जो एक नेता से जनता को आशा रहती है. यही कारण है कि जनता उन्हें अपने सर ऑखों पर हमेशा बैठाए रहती है.

तीसरे नंबर की भारतीय क्रिकेट टीम ने अपना परचम लहराया

✍ राही 'अलबेला'

विश्व की तीसरे नंवर की भारतीय क्रिकेट टीम ने विश्व कप के मैंच में अपने जोरदार प्रदर्शन से खेल प्रेमियों को दिल जीत लिया. यह विश्व कप इतिहास में भारतीय क्रिकेट टीम के लिए सुनहरा व यादगार मौका है. विश्व के कुल ११ देशों के क्रिकेट टीम में भारतीय क्रिकेट टीम के आगे केवल विश्व की दो ही टीमें है. विश्व की नंवर वन टीम है वारामुडा व दूसरे नंवर की टीम है जिम्बाबें. बस इतना ही हैं कि विश्व कप क्रिकेट में हमारी भारतीय क्रिकेट टीम विश्व के धुरंधर बल्लेबाजों, व गेदंबाजों के रहते प्रथम स्थान प्राप्त न कर सकी. जिस पर भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के अध्यक्ष श्री शरद पवार ने दुःख प्रकट किया है. उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा है कि 'हमें यह बताते हुए बेहद कष्ट हो रहा है कि भारतीय क्रिकेट टीम विश्व के महानतम बल्लेबाजों व गेंदबाजों के रहते भी जिम्बाम्बें व वारामुडा से पिछड़ गयी. हम इस पर कड़ा कदम उठाएंगे. उन्होंने भारतीय टीम के कोंच को तीसरे नंबर पर पहुँचने पर अनुबंध आगे न बढ़ाने को कहा तथा खिलाड़ियों के खिलाफ भी सख्त कार्यवाही करने को कहा. आगे उन्होंने कहा कि पिछले वर्ल्ड कप में हमारी टीम ऊपर से दूसरे स्थान पर थी. यानि उपविजेता थी तो उसको अपना प्रदर्शन सुधारते हुए ऊपर से न सही, नीचे से तो प्रथम आना ही चाहिए था. अगर प्रथम स्थान नहीं पा सके तो जिम्बाम्बें की जगह भी मिलती तो हमें कष्ट नहीं होता.

भारतीय क्रिकेट टीम के तीसरे स्थान पर पहुँचने पर सुप्रसिद्ध समाज सेवी दाऊजी ने कहा-'यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि करोड़ों रुपये वार्षिक आय वाली हमारी क्रिकेट टीम के खिलाड़ियों ने कम से कम अपने पैसे की लाज रख ली. उन्हें कम से कम विज्ञापनों में अपना थोबड़ा दिखाने में बेशर्मी आड़े नहीं आएगी. कुछ कम्पनियों के द्वारा विज्ञापनों के प्रसारण पर रोक के लिए दाऊजी खेद जाहिर किया. उन्होंने कहा-अरे, कम से कम तीसरे पर तो है, उन्हें अपनी बेशर्मी दिखाने का भरपूर मौका दिया जाना चाहिए. यह क्रिकेट खिलाड़ियों का जन्मसिद्ध अधिकार है.

भारत के कोच ग्रेग चैपल ने विश्व कप के भारत के प्रथम मैच से पूर्व कहा था कि उनके खिलाड़ियों ने विश्व कप क्रिकेट के लिए जम कर तैयारी की है. और अब उन्हें अपने पहले मैच का इंतजार है.

भारतीय खिलाड़ियों ने तैयारी का फायदा उठाते हुए १७ मार्च को पहला मैच बंगलादेश जैसी सुप्रसिद्ध टीम से बूरी तरह मात खा गयी. यह हमारे टीम के लिए सौभाग्य की बात है. विश्व कप के अपने दूसरे मैच में हमारी सुपरस्टार टीम के सुपर स्टार खिलाड़ियों ने एक मुहल्ले की टीम वारामुडा के खिलाफ रिकार्ड बनाते हुए बहती गंगा में सभी खिलाड़ियों ने हाथ धो डाले. जो भी खिलाड़ी हाथ धोने से बच गया वह बहुत ही पछताया. क्योंकि ऐसी टीम से खेलने का मौका बहुत ही कम मिलता है. कुछ नहीं तो व्यक्तिगत रिकार्ड सुधारने में सहूलियत होती. टीम से हमें क्या लेना देना. इस पर विचार व्यक्त करते हुए सुप्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी नबाब कादिर शाह जानम ने कहा कि बंग्लादेश से मात खाने पर विश्व कप क्रिकेट के भारतीय टीम के खिलाड़ियों को एक करोड़ मासिक अगले विश्व कप तक बोनस दिया जाना चाहिए तथा खिलाड़ियों से मैंच न खेलवाकर केवल लटके-झटके वाले विज्ञापन करवाने चाहिए. इससे हमारे देश की इज्जत भी बनी रहेगी और भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के साथ ही साथ खिलाड़ियों की असीमित आय में भी इजाफा होगा.

लेखन प्रतियोगिता नं० १

इसमें रचनाकार को दिये गये शब्द पर एक कविता लिखकर भेजनी होगी. प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार पाने वाले रचनाकारों की रचनाओं को प्रकाशित किया जाएगा तथा क्रमशः विश्व स्नेह समाज की त्रैवार्षिक, द्विवार्षिक व वार्षिक सदस्यता प्रदान की जाएगी. यह प्रतियोगिता १२ वर्ष से ३५ वर्ष तक के उम्र के साहित्यकारों के लिए ही होगी.

नियम एवं शर्तेः १. एक रचनाकार की एक ही रचना मौलिकता के प्रमाण के साथ स्वीकार की जाएगी. २.रचना के लिए रचानाकार स्वयं जिम्मेदार होगा. ३. पत्रिका परिवार का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा.४. किसी भी प्रकार के विवाद के संदर्भ मे न्यायालीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा.५. रचना के साथ जबाबी टिकट लगा लिफाफा व कूपन की मूल प्रति लगाना न भूलें.

__शब्दः नेताजी__ लिखें-संपादक, विश्व स्नेह समाज,
ईनामी प्रतियोगिता न०१, एल.आई.जी.-६३, नीम सरॉ कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

सभी प्रत्याशी मुझसे लड़ रहे हैं: प्रेमप्रकाश

देवरिया जिले के बरहज विधानसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी प्रेमप्रकाश सिंह क्षेत्रीय मूल निवासी होने के बावजूद लम्बे अंतराल तक बाहर रहे. लेकिन जब क्षेत्र में कदम रक्खा और जनता ने उन्हें अपना प्रतिनिधि बनाया तो जनता के चयन को सही साबित करते हुए विकास की ऐसी नदी बहा दी कि जनता उनके रहने व न रहने को ध्यान नहीं देती. जनता तो उनके विकास कार्यो की मूरीद है. जनता को विकास चाहिए चाहे प्रतिनिधि क्षेत्र में रहे या बाहर. इमरजेन्सी के समय में राजनीति में आए, पूर्व मंत्री प्रेमप्रकाश सिंह का जन्म १ अक्टूबर १९५२ को केशव नाथ सिंह के पितृत्व व श्रीमती सूर्यमुखी देवी के मातृत्व मे हुआ. प्रारम्भिक शिक्षा पैना, देवरिया से करने के बाद लखीमपुर, व लखनऊ से माध्यमिक शिक्षा ग्रहण की तथा नैनीताल से स्नातक किया.

उनका कहना है कि मेरा मुख्य चुनावी मुद्दा क्षेत्र के रुके हुए कार्यो को पूरा करना, भागलपुर तथा पैना में घाट बनवाना, मौना के

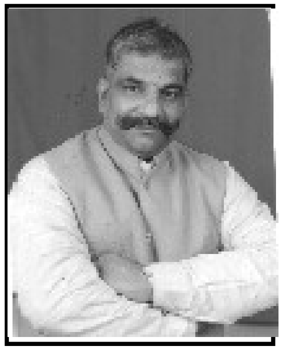

पास, भलुअनी के पास विद्युत उपकेन्द्र की स्थापना, पेयजल योजना में हर गांव को पानी, सड़क, बिजली उपलब्ध ा कराना, किसानों के चेहरे पर खुशहाली लाना, बिना भेद भाव के काम करना, सबको सम्मान देना होगा. जब मैं क्षेत्र का प्रतिनिधि था तो मैंने भागलपुर पुल का शुभारम्भ, बरहज में पीपे का पुल बनावाया, विद्युत उपकेन्द्र की क्षमता बढ़वाई, कानली विद्युत उपकेन्द्र की पूरा करवाया, सड़को का जाल बिछाया व शिक्षा प्रचार-प्रसार की व्यवस्था की. मेरे पूर्व कार्यकाल के विकास कार्यो को देखकर विपक्षी बौखला गए है. उन्हें मेरे खिलाफ कोई मौका नहीं मिला तो कह रहे है कि मैं क्षेत्र में नहीं रहा. मैं तो क्षेत्र के बाहर रहकर भी विकास के लिए प्रयासरत रहा लेकिन वे तो यहीं रहकर जनता के बीच नहीं आये. उन्होंनें वर्तमान मंत्री व विधायक पं. दुर्गा प्रसाद मिश्र के पांच साल के कार्यकाल के बारे कहा कि मैं कुछ नहीं कहूंगा इसका जबाब क्षेत्रीय जनता चुनाव में देगी. मुलायम सरकार के बारे में जनता कहेगी और कह रही है.

उन्होंने कहा-सभी प्रत्याशी मुझसे लड़ रहे है. मैं अपनी जीत के प्रति पूरी तरह आश्वस्त हूँ क्योंकि विगत ५ वर्षो में जो मैंने काम कराया है, उसे जनता देख रही है, और जनता का विश्वास मुझ पर बढ़ गया है. हमारी सरकार सत्ता में आ रही है व कल्याण सिंह मुख्यमंत्री बनने जा रहे है. जनता भाजपा की तरफ देखा रही है. उन्होंने जनता से अधिक से अधिक मतों से चुनावे जीताने व अपना कार्य कराने को कहा.

पत्रिका के प्रकाशन पर समस्त पाठकों को हार्दिक बधाई

ANMOL™ The Right Bite

खाओं दिल खोल के
बिस्कुट अनमोल के

सुपर स्टाकिस्टः बाबूजी इण्टर प्राइजेज

185/20, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद, 0532–2414734, 9415254264,

Manufactors: Anmol Bakers Pvt. Ltd. Office: B-2 & 3, Sector-16, Noida, U.P

हम राम रहीम को साथ लेकर चलने वाले लोग है : शाका बाबा

उत्तर प्रदेश के कैबिनेट मंत्री पं. दुर्गा प्रसाद मिश्र के पुत्र व भागलपुर ब्लाक के ब्लाक प्रमुख दीपक कुमार मिश्र उर्फ शाका बाबा से हमारे बरहज ब्यूरो सौरभ तिवारी ने उनके गांव बगुची में जाकर बातचीत की प्रस्तुत है बातचीत के मुख्य अंश-

ब्लाक प्रमुख के रुप में किए गए कार्य के बारे में पूछने पर कहा-मैंने अपने अल्पकार्यकाल में देवसीया में खड़न्जा, नरसिंगड़ा में नाली व सड़क, परासिया चन्दौर में सामुदायिक विकास केन्द्र की मरम्मत, इसरैली रेघरवा में खडन्जा व सड़क, बलिया गोदाम की मरम्मत, देवरहवा बाबा पोखरे का शुद्धिकरण, शुकरैली में सड़क निर्माण, वगहा कृषि संरक्षण भूमि की मरम्मत, मईल में दो सड़को निर्माण,पीपरावार में नाली, सड़क, खेगवल प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की मरम्मत, विशुनपुरा व कसीली में पुलिया निर्माण, मौना गढ़वा में कृषि भवन व ब्लाक परिसर की मरम्मत, अनावली, गढ़ीला, अण्डिला, में सड़क निर्माण, बलहा में पुल का निर्माण, कोवातारा व नैती में पोखरे का सौन्दर्यीकरण, इसारू का खन्डजा कार्य, भागलपुर में श्मसान घाट पर सौदागृह बनवाया जा रहा है.

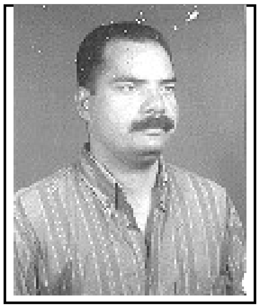

आप अपने पिताजी (पं. दुर्गा प्रसाद मिश्र) की लड़ाई किससे मान रहे है पर कहते है-पिताजी के विकास कार्यो की जनता तहजीब दे रही है. जनभावनाओं को देखते हुए लगता है कि बाकी के लोग पीछे रह गये, जनता जाति और धर्म पर न जाकर विकास को तवज्जों दे रही है. हम अपनी जीत के प्रति सौ प्रतिशत आश्वस्त है.

बरहज से करुअना की सड़क के बारे में कहते है-पिताजी ने लोकनिर्माण मंत्री शिवपाल यादवजी से बात की थी उन्होंने इसके लिए आश्वासन भी दिया था. लेकिन नही बन पाई. शायद पी. डब्लू डी से बनता है, विधायक निधि से नहीं. अगर जनता पुनः चुनती है तो इसे एक महीने में यह बन जाएगी. मंत्रीजी के विधायक चुने जाने पर क्या कार्य करेंगे तो उन्होंने कहा- बरहज में बस अड्डा, पीपे के पुल को पक्का पुल बनवाना, स्थायी रोजगार के अवसर दिलवाना, मईल में राजकीय डिग्री कॉलेज की स्थापना होगी.

जनता नेता चुनने जा रही है. चुनाव जनबल से जीते जाते है बाहुबल व धनबल से नहीं. जनबल मेरे साथ है. हम जनता की आवाज उठाते है, उठाते रहेंगे. हम चरित्र और संस्कार वाले लोग है. हम राम रहीम को साथ लेकर चलने वाले लोग है और इसी में हम विश्वास करते है.

With Best Compliment From:

UNICS COMPUTER ACADEMY

Hardware & Software Education, Job Work,

Cont at:
3A, Vinova Nagar, Naini, Allahabad, U.P, Mo.:9335354462

पत्रिका के सभी पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएं

सभी प्रकार की योग की कक्षाएं चलवाने हेतु सम्पर्क करें

योगी जी,
सुप्रसिद्ध योगाचार्य
09839400113

समाज के निर्माण में साहित्य का योगदान

डॉ० महेश चन्द्र शर्मा
रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लाजपत राय कॉलेज, साहिबाबाद

आज के आपाधापी, भाग-दौड़, स्वार्थपरता, वैचारिक संकुचितता-संकीर्णता तथा सांस्कृतिक मूल्यों के गिरावट के युग में व्यक्ति संवेदना-शून्य हो गया हैं. दूसरों की कमियां निकालना बहुत सरल कार्य है, किन्तु दूसरों की की प्रगति की सराहना करने के लिए सहनशीलता की आवश्यकता होती है. भारत के विश्वविख्यात महापुरुष स्वामी विवेकानन्द सरस्वती की मान्यता है कि "दूसरों के दोष देखने में आप जितना समय लगाते हैं, उतना अपने दोष सुधारने में लगाइए." मेरी यह निश्चित मान्यता है कि रूढ़िवादी, अन्धविश्वासी, भाग्यवादी, भोगवादी तथा कुरीतिवादी प्रगतिशील नहीं होते. ऐसे लोगों का निश्चय ही पतन हो जाता है.

समाज के निर्माण में साहित्यकार विशिष्ट भूमिका निभाता है. मैं हिन्दी-साहित्य से लेकर कुछ साहित्यकारों के उदाहरण, यहाँ देना चाहूंगा जिन्होनें अपने चिन्तन के आधार पर भारतीय समाज के निर्माण में अद्‌भूत कार्य किया है-निर्णायक भूमिका निभाई हैं.

१. यद्यपि सन्त कबीर साहब 'जीवन के विद्यालय' से पढ़कर आए थे, तथापि उन्होंने अपने वैचारिक-क्रान्तिकारी साहित्य के माध्यम से समाज के सामने अपना "समन्वयवादी जीवन-दर्शन" उपस्थित किया है. उनके मस्तिष्क में एक स्वस्थ एवं रचनात्मक समाज के निर्माण का नक्शा विद्यमान था. भारतीय समाज के निर्माण की दृष्टि से उनका योगदान सदैव याद किया जाएगा.

२. भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के जबरदस्त प्रतिष्ठापक गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरित मानस' जीवन की समग्रता को लेकर चलने वाली एक 'कालजयी' रचना हैं जिसकी जड़े भारत की धरती में हैं. मानसकार ने 'सुन्दर कांड' के अन्त में लक्ष्मण के माध्यम से "दैव दैव आलसी पुकारा" कहकर भाग्यवादियों (आलसी एवं कायरों) को नहीं, वरन् पुरुषार्थवादियों को ही महत्ता प्रदान की हैं. गोस्वामी तुलसीदास ने 'मानस' के 'उत्तरकांड' में धर्म का 'सार्वभौम' लक्षण बतलाया है कि

"परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।" हमारे यशस्वी महाकवि ने अपने इस 'शिक्षा-दर्शन' के आधार पर समाज को 'जीने की कला' सिखाई है. समाज को गोस्वामी तुलसीदास का आभारी होना चाहिए.

३. मैथिलीशरण गुप्त को मैं विचारपरक कवि मानता हूँ. गुप्त जी मानवतावादी साहित्यकार रहे हैं. उन्होंने अपनी 'गुरुकुल' नाम्नी रचना में 'मनुष्यता' पर बल देते हुए यह लिखा है कि-

"हिन्दू हो या मुसलमान हो, नीच रहेगा फिर भी नीच। मनुष्यत्व सबसे ऊपर है, मान्य मही मण्डल के बीच।।"

'मंगलघट' नाम्नी रचना की 'स्वर्गिक संगीत' शीर्षक कविता के माध्यम से गुप्त जी का 'प्रबोधात्मक चिन्तन' हमारे सामने आया हैं. समाज के निर्माण की दृष्टि से उनका यह चिन्तन निश्चय ही सराहनीय बन पड़ा हैं.

४. भविष्योन्मुखी साहित्य के स्रष्टा एवं उदात्त सॉस्कृतिक मूल्यों के पक्षधर जयशंकर प्रसाद विचारपरक साहित्यकार रहे हैं. उन्होंने अपनी 'कामयनी' नाम्नी लोकप्रिय रचना के माध्यम से हमें जीवन-संघर्षो से जूझने की प्रेरणा दी है, संसार से पलायन करने की नहीं.

५. हमारी श्रद्‌धेया साहित्यकार महादेवी वर्मा ('अतीत के चलचित्र' पृष्ठ ६५) की मान्यता है कि -"नारी; वह समाज की शक्ति है." इस मत के माध्यम से महादेवी जी ने भोगवादी भारतीय समाज को सही दिशा प्रदान की है. उनका यह चिन्तन पठनीय; विचारणीय एवं 'आचरणीय' बन पड़ा हैं. 'श्रृंखला की कड़िया' की लेखिका ने भोगवादी समाज को 'जीने की कला' सिखाई हैं. भारतीय समाज को महादेवी वर्मा का आभारी होना चाहिए.

६.संघर्षशील व्यक्तित्व के धनी साहित्यकार मुंशी प्रेमचन्द्र का साहित्य समाज को जीवन-मूल्यों की शिक्षा दे रहा हैं. उपन्यासकार प्रेमचन्द्र ने हिन्दी भाषा भाषी जनता का मानसिक संस्कार किया हैं. उनकी निम्नस्थ मान्यता समाज के निर्माण की दृष्टि से बहुत उपयोगी है-"जब तक हम व्यक्तिगत रुप से उन्नत नहीं है, तब तक कोई भी सामाजिक व्यवस्था आगे नहीं बढ़ सकती."

७. रामधारी सिंह दिनकर को आलोचक 'शक्ति और प्रेरण का कवि' मानते हैं. हमारे इस कवि ने भाग्यवाद को नकारते हुए पुरुषार्थवा पर बल दिया है-

"ब्रहमा से कुछ लिखा भाग्य में,
मनुज नहीं लाया है।
अपना सुख उसने अपने,

भुजबल से ही पाया है।।"

८. प्रयोगवाद के प्रवर्त्तक श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' कृत 'सॉप' एक प्रतीकात्मक कविता है-व्यंग्यात्मक कविता हैं. हमारे इस कवि ने सॉप को महानगरों में रहने वाले असभ्य एवं बनावटी जीवन जीने वाले लोगों का प्रतीक बनाकर उपस्थित किया हैं. महानगरवासी स्वार्थी होते हैं तथा वे 'जीने की कला' नहीं जानते. यह कविता सचमुच सन्देश-प्रधान कविता हैं. उदाहरण निम्नस्थ है-"सॉप!
तुम सभ्य तो हुए नहीं
नगर में बसना भी, तुम्हें नहीं आया।
एक बात पूछूँ (उत्तर दोगे?)
तब कैसे सीखो डसना,
विष कहॉ पाया?"

९. विचारक श्री प्रेम स्वरुप गुप्त-कृत 'साहित्य की उपयोगिता' एक सन्देश-प्रधान रचना है. गुप्त जी की यह मान्यता निरापद है और हमें जीने की कला सिखाता हैं. जीवन का लक्ष्य है-आनन्द. साहित्य हमारे वैयक्तिक और समष्टिगत जीवन को अधिक आनन्दमय बनाता है.'

ऊपर दिए गए साहित्यकारों के उदाहरणों के आधार पर यह बात सिद्ध हो जाती है कि समाज के निर्माण में साहित्य की भूमिका सर्वथा अपरिहार्य हैं.

रवीन्द्र ज्योति मा.
संपादकः **डॉ. केवल कृष्ण पाठक**
३४३/१६, आनन्द निवास, गीता कॉलोनी, जीन्द-१२६१०२, हरियाणा
++++++++++++++++++++++++
विवरण पत्रिका मासिक
संपादकः **श्री घोण्डीराव जाधव**
हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद, नामपल्ली स्टेशन रोड, हैदराबाद-५०००01

शुभ मुहूर्त में ही शुरू करें नया काम

ज्योतिष, आकाश से पृथ्वी पर आने वाली रश्मियों के प्रभाव व परिणाम का अध्ययन है. विशेष नक्षत्रों के समय कई अमृत रश्मियों तथा कई विष रश्मियों से वातावरण आच्छादित रहता. नक्षत्रों का अपना स्वरुप, गुणधर्म व स्वभाव है. किसी कार्य विशेष के समय नक्षत्र विशेष, लग्न विशेष इत्यादि के चयन ही कार्य की गतिशीलता, सफलता और लक्ष्य निश्चित करती है. मुहूर्त के संदर्भ में यही महत्वपूर्ण तथ्य है कि उस काल विशेष में कितनी अमृत रश्मियां वातावरण में मौजूद थी. इसके साथ ही साथ यह कार्य विशेष किस नक्षत्र तथा लग्न के गुणधर्म, स्वरुप व स्वभाव से मेल खाता है. इन्हीं रश्मियों के गहन शोध और अनुभवगत अध्ययन के आधार पर मुहूर्त निर्धारण बताया गया है.

हमारे देश में वैदिक काल से ही शुभ मुहूर्त में कार्य प्रारंभ करने की अपरिहार्यता रही है. गर्भाधान संस्कार से प्रारंभ करते हुए षोडश संस्कार वैदिक काल से ही प्रचलित रहे है. कार्य की पूर्णता व सफलता के उद्देश्य से शुभ मुहूर्त में कार्य प्रारंभ करने की परंपरा वंशानुगत वर्णानुसार आज भी चली आ रही है. जहां एक ओर हमारे आदि ग्रंथों में भी शुभ मुहूर्त में प्रारंभ किए गये कार्यो की पूर्णता एवं सफलता के असंख्य उदाहरण हैं, वहीं दूसरी ओर बिना मुहूर्त या अचानक कार्य प्रारंभ करने के परिणामस्वरुप बाधाओं सहित कार्य बीच में ही बंद होने या कार्य की असफलता के भी कई उदाहरण उपलब्ध है. हमें अपने दैनिक महत्वपूर्ण यथा गृह निर्माण, गृह प्रवेश, मुंडन संस्कार, यज्ञोपवित आदि कार्यो के लिए आज भी मुहूर्त की आवश्यकता होती है, जिसके लिए हमें किसी ज्योतिषीी की आवश्यकता महसूस होती है. यूं तो देखने में यह आता है कि लोगों को वाहन क्रय करना हो या ऐसा ही कोई अन्य अवसर हो तो, भ्रदा देखकर ही क्रय करना अभी उचित नहीं है, छोड़ देते हैं, लेकिन तमाम ऐसे मौके होते हैं कि भ्रदा न होने पर भी वाहन या अन्य कोई विशेष कार्य करने पर उसका परिणाम अच्छा होने की बजाय उसके बिल्कुल विपरीत हो जाता है जैसे वाहन लेकर लौटते समय ही दुर्घटनाग्रस्त हो जाना या अन्य कोई नुकसान हो जाना. इसका प्रमुख कारण यह भी है कि कदाचित करण के अतिरिक्त लग्न, लग्नेश, तिथि, वार नक्षत्र, योग प्रहर व घटी आदि के साथ ही साथ ग्रहीय स्थिति पर विचार नहीं किया.

मुहूर्त के निर्धारण में तिथि, वार, नक्षत्र योग, करण, प्रहर तथा घटी सभी की आवश्यकता होती है क्योंकि उक्त सभी पर विचार करते हुए ही मुहूर्त का निर्धारण किया जाना चाहिए. मुहूर्त जैसे अति संवेदनशील विषय के साथ शुभ मुहूर्त जानने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति और ज्योतिषी दोनों के द्वारा ही पूर्णतः सजगता बरतनी चाहिए. मुहूर्त के साथ समझौतावादी दृष्टिकोण नहीं अपनाना चाहिए क्योंकि कार्य की पूर्णता व सफलता शुभ मुहूर्त पर ही निर्भर करती है.

साभारः युनाईटेड भारत, इलाहाबाद

साहित्य का महायज्ञ अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न

प्रथम सत्र

कवि सम्मेलनों की स्तरीयता विषयक विचार गोष्ठी एवं पत्र-पत्रिका एवं पुस्तक प्रर्दशनी

साहित्य के महायज्ञ, देश के साहित्य जगत में हलचल मचाने वाला, साहित्यकारों में बहुचर्चित, साहित्य मेला सकुशल हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद में सम्पन्न हो गया. कार्यक्रम को सामान्य साहित्यिक गतिविधियों से दूरी बनाए रखनी वाली स्थानीय प्रिंट व इलेक्ट्रानिक मीडिया ने प्रमुखता से सचित्र प्रकाशित व प्रसारित किया. स्थानीय साहित्य जगत में यह एक चर्चा केन्द्र का बना रहा. गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान व राष्ट्रीय हिंदी मासिक विश्व स्नेह समाज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित होने वाले इस मेले का शुभारम्भ पत्र-पत्रिका एवं पुस्तक प्रर्दशनी के मुख्यअतिथि डॉ० सिद्धनाथ कुमार, वरिष्ठ साहित्यकार, रांची व श्री श्याम विद्यार्थी, वरिष्ठ निदेशक, दुरदर्शन केन्द्र, इलाहाबाद द्वारा उद्घाटन से प्रारम्भ हुआ. प्रर्दशनी में देश के कोने-कोने से प्रकाशित लगभग पॉच सौ पत्र-पत्रिकाएं, व सैकड़ों पुस्तकें लोगों को जानने व देखने को मिली. कार्यक्रम में पधारे विद्वजनों ने बड़ी संख्या में इनकी खरीदारी भी की. पत्र-पत्रिका व पुस्तक प्रर्दशनी के अवलोकन के बाद कवि सम्मेलनों की स्तरीयता विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया. विचार गोष्ठी में दिल्ली से पधारी भारत जापान सांस्कृतिक मंच की अध्यक्ष डॉ. राज बुद्धिराजा, मुख्यअतिथि डॉ. सिद्धनाथ कुमार व दूरदर्शन केन्द्र के निदेशक श्री श्याम विद्यार्थी ने सहित कौशाम्बी के मो. अन्सार शिल्पी, ने कविता के माध्यम से विचार गोष्ठी पर अपने विचार व्यक्त किए. इसके अलावा मुंबई की डॉ. तारा सिंह, भीलवाड़ा के श्री वंशी लाल पारस, मुंबई के ही डॉ. वी.पी.सिंह आदि ने अपने विचार व्यक्त किए. गोष्ठी का संचालन विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की अध्यक्षा श्रीमती विजय लक्ष्मी विभा ने किया तथा आभार सचिव, गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने किया.

कवि हृदय से कविता नहीं करताः डॉ. राज बुद्धिराजा

विशिष्ट अतिथि के पद से बोलते हुए भारत जापान सांस्कृतिक मंच की अध्यक्षा डॉ. राज बुद्धिराजा ने कहा-कवि मनीषी है, समर्पण करता है, कवि ब्रहम को अपने शब्दों में उतारता है. कविता सत्य एवं ब्रहम का प्रतीक है. कविता छन्द रुपी तट से बंधी हुई नदी है. आज कविता पैसे के लिए पढ़ी जा रही है. कवि सम्मेलनों में कवियों को कितना पैसा मिलेगा यह पहले तय कर लिया जाता है, कवि कविता पढ़ने और अपना पैसा पाने के बाद मंच पर समय नहीं देते. अंत में एक या दो कवि ही बचते हैं. पहले कवि श्रोताओं को सबसे बड़ा धन मानते थे परन्तु आज परिस्थितियां बदल गयी हैं. आज की कविता शेयर बेचने और खरीदने जैसा बताया. अधिकतर कवि कविता में चुटकुले अधिक सुनाते हैं कवियों के पास तीन या चार कविता होती है. उसी को बदल-बदल कर मंच पर पढ़ते हैं. उन्होंने बहुत दुख के साथ कहा कि आज कविता की चोरी हो रही हैं.

आज कविता हृदय से नहीं बुद्धि से लिखी जा रही है

मुख्यअतिथि के पद से बोलते हुए डॉ. सिद्धनाथ कुमार ने कहा कि कविता सहज जीवन की अभिव्यक्ति होती है. आज कविता हृदय से कोई नहीं लिख रहा है. सब बुद्धि से लिखी जा रही है. लोग कविता पैसे के लिए लिख रहे हैं. जन सामान्य से जुड़ी रचना सामने लानी होगी. इससे कविता का स्तर ऊंचा हो सकेगा.

कवियों में आत्मबोध की भावना होनी चाहिएःश्याम विद्यार्थी

इलाहाबाद दूरदर्शन वरिष्ठ निदेशक श्री श्याम विद्यार्थी ने कहा-'आज के समय में कवि ही गुम हो गया है, कविता विलुप्त है तो कवि सम्मेलन कैसा होगा. इसकी कल्पना कीजिए. हमारे चारों ओर के परिवेश में हास हुआ है. कवियों में आत्मबोध की भावना होनी चाहिए. कवियों ने कवि सम्मेलन को व्यवसाय से जोड़ लिया है. यह उनका धन्धा हो गया है. कविता पर किसी का बंधन नहीं चल सकता. आत्म मंथन की आवश्यकता है. समाज के प्रति कवियों की जिम्मेदारी है जो आज नहीं दिखाई पड़ता. यह घोर चिंता का विषय है. अगर आज के लोग नहीं सुधरे तो आने वाली पीढ़ी हमारे बारें में क्या सोचेगी.'

द्वितीय सत्र

कार्यक्रम का दूसरा सत्र सरस्वती मॉं की प्रतिमा पर माल्यार्पण व द्वीप प्रज्जवलन से प्रारम्भ हुआ. अतिथियों के माल्यार्पण के बाद संस्थान के सचिव व संपादक, हिंदी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने संस्थान की प्रगति रिपोर्ट पढ़ी. उन्होंने बताया कि संस्थान के द्वारा अब तक सौ साहित्यकारों, २५ पत्रकारों व २५ समाजसेवियो को सम्मानित किया जा चुका है. संस्थान ने कुल ८ पुस्तकों का प्रकाशन किया है तथा शीघ्र हिंदी महाविद्यालय खोलने की योजना विचाराधीन है. अगले वर्ष से संस्थान द्वारा जीवित साहित्यकारों के नाम पर ही सम्मान दिए जाएगें.

प्रगति रिर्पोट के बाद भारत जापान सांस्कृति मंच की अध्यक्ष, जापान के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित हो चुकी, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की संरक्षिका डॉ. राज बुद्धिराजा के ७०वें जन्म दिवस पर प्रकाशित 'विश्व स्नेह समाज' के डॉ.राज विशेषांक का विमोचन किया गया. साथ ही इस अवसर पर संस्थान द्वारा उनका अभिनंदन भी किया गया. अभिनंदन पत्र संस्थान के सचिव गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, विजय लक्ष्मी विभा, ईश्वर शरण शुक्ल, श्रीमती जया 'गोकुल' व राजेश सिंह के द्वारा संयुक्त रुप से भेंट किया गया. अभिनंदन पत्र को पद्य में सुश्री विजय लक्ष्मी विभा व राजेश सिह ने अलग-अलग तैयार किए थे. जिसका उन लोगों के द्वारा वाचन भी किया गया. दिल्ली से पधारे श्री रुपेश पंडित ने डॉ. राजबुद्धिराजा पर अपने विचार व्यक्त किए. संस्थान की तरफ से वरिष्ठ साहित्यकार, रांची डॉ. सिद्धनाथ कुमार को साहित्य गौरव, वरिष्ठ निदेशक दूरदर्शन इलाहाबाद, श्री श्याम विद्याथी को साहित्य वारिधि, मुंबई की डॉ. तारा सिंह को विद्या वारिधि, चाम्पा, छत्तीसगढ़ के डॉ. विद्या विनोद गुप्त को विद्या वाचस्पति, इलाहाबाद के डॉ. विनय मालवीय को बाल श्री, लखनऊ के श्री बुद्धिराम विमल को लक्ष्मीकान्त वर्मा सम्मान, पटना के श्री देवकी नन्दन शुक्ल को मुंशी प्रेमचन्द्र सम्मान, भीलवाड़ा राजस्थान के श्री वंशी लाल पारस को पंत सम्मान, लखनऊ से पुलिस अधीक्षक श्री अखिलेश निगम को मोती बी.ए. सम्मान, तथा बलिया के श्री डी.पी.उपाध्याय मनि मगनजी, इलाहाबाद के एडवोकेट श्री बालकृष्ण पाण्डेय, श्री कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव, ग्वालियर, म.प्र. के श्री राजेन्द्र रज्जन उर्फ आर.पी. सक्सेना, ग्वालियर, म.प्र. के अनन्त राम गुप्त, पिथौरागढ़, उत्तरांचल के शंशाक मिश्र 'भारती' , रतलाम, म.प्र. की श्रीमती इन्दु सिन्हा, जबलपुर, म.प्र., सनातन कुमार वाजपेयी, चाम्पा, छत्तीसगढ़ के पं. मोहन लाल वाजपेयी, झांसी उ.प्र के डॉ. ओमप्रकाश हयारण दर्द, सोनीपत, हरियाणा के नरेश कुमार सचदेवा को विश्व हिंदी साहित्य सेवा अलंकरण प्रदान किया गया तथा दमोह, म.प्र. के महेन्द्र श्रीवास्तव को प्रशस्ति पत्र दिया गया.

इस अवसर पर साहित्यकार कल्याण परिषद, रायबरेली के संपादक पं. रामचन्द्र शुक्ल, आई.एन.जे.एफ के संरक्षक मिथिलेश द्विवेदी, श्री राजकिशोर भारती, डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय, रमाशंकर तिवारी, विश्व स्नेह समाज से ब्यूरो देवरिया पुष्पांजलि द्विवेदी, गोरखपुर ब्युरो प्रतिमा राय व संजय गुप्ता, अशोक गुप्ता, राजेश सिंह, योगेश कुशवाहा, बाल्य संपादिका संस्कृति गोकुल, अनु मिश्रा, वी.पी.पाण्डेय, एडवोकेट संगीता श्रीवास्तव, मो. अन्सार शिल्पी सहित स्थानीय प्रिंट मीडिया व इलेक्ट्रानिक मीडिया के सैकड़ों प्रतिनिधि मौजूद थे. कार्यक्रम का संचालन संयुक्त रुप से संस्थान की अध्यक्षा श्रीमती विजय लक्ष्मी विभा व सचिव गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने किया.

तृतीय सत्र

कार्यक्रम के तीसरे सत्र में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया. सरस्वती वंदना से प्रारम्भ हुआ. कार्यक्रम में पटना से पधारे हारुन रशीद 'अश्क' ने-

गीत ही प्रारम्भ था,
फिर गीत ही तो अंत है
गीत ही लीला है उसकी
जो जगत के कंट है।

सुनाकर शमा बांधा तो चाम्पा, छत्तीसगढ़ से पधारे अवधेश गुप्ता ने-यदि तुम लिखो तो, रामत्व की कलम से रावणत्व का संहार लिखो।

के.के वैश्य 'कृष्ण', लखनऊ ने-तन मिल गया तो समझो कुछ तो अभी मिला है। मन मिल गया तो समझो सब कुछ हमें मिला है, गाड़ी सदा चली है विश्वास के डगर पे, विश्वास उठ गया तो बाकी कहॉं सिला है।

बहराईच से पधारे युवा कवि ईश्वर शरण शुक्ल ने-निठारी की पिटारी ने, खोला दरुण दाग।कामुक पिपासा का जोड़ गया नया भाग।।

भीलवाड़ा, राजस्थान से पधारे वरिष्ठ कवि वंशीलाल पारस ने-पनघट पर आंखे खोती है, मरघट पर आंखे रोती है, मैं आज तक नहीं समझा,ये आंख मिचौनी क्यों आती है।

इलाहाबाद के नरेन्द्र श्रीवास्तव ने-
तुम्हारा हमारे जीवन में आना
मानो, सपने का यथार्थ में ढल जाना

झॉसी, उ.प्र. से पधारे डॉ. ओमप्रकाश हयारण दर्द ने-ये क्या हरदम हमीं पे तानते, अम्न से जीना नहीं ये जानते

बातो से तुम क्यों मनाते हो इन्हें
दूसरी भाषा ये जब पहचानते।।

दमोह,म.प्र. से पधारे महेन्द्र श्रीवास्तव ने-अंधियारों की धूप मची है, उजियारे वेहोश पड़ें।आतंको के अवरोधो में, प्रबुद्ध जन खामोश खड़े।

बलिया, उ.प्र. से पधारे डी.पी.उपाध्याय मगन मनीजी ने-हे ज्ञानारि, ज्ञान रहित शिक्षा प्रमाण-पत्र पाकर क्या करोगे।जब भी करोगे किसी विद्योत्तमा की,ऑख में उँगली ही करोगे, जब जब चर्चा होगी ज्ञान की, विश्व हिंदीतुम साधे मौन रहोगे रहकर अज्ञानी स्नातक आजीवन

के अतिरिक्त इलाहाबाद के बैजनाथ मिश्र 'कल्पनेश' आदि ने भी काव्य पाठ किए. कार्यक्रम संचालन संस्थान की अध्यक्षा श्रीमती विजय लक्ष्मी विभा ने किया तथा आभार सचिव गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने व्यक्त किया. कार्यक्रम के अंत में सभी कवियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया.

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान प्रगति आख्यान

उद्देश्यः संस्थान का गठन हिंदी के विकास/हिंदी प्रेमियों को सम्मानित करने/रचनाकारों की रचनाओं को प्रकाशित करने/निर्धन/असहाय साहित्यकारों को यथा सम्भव सहयोग करने/ पत्रकारिता के पाठ्यक्रम/ हिंदी के गीत, गज़ल, कहॉनी, लेख, कविता, संस्मरण, उपन्यास, नाटक सहित सभी विधाओं को लिखने के लिए पाठ्यक्रम संचालित करना/ काव्यगोष्ठी/कवि सम्मेलन/ परिचर्चा/ पुस्तक प्रदर्शनी इत्यादि का समय-समय पर आयोजन करना हैं. साथ ही भारत की अन्य भाषाओं के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं को भी आम आदमी के बीच हिंदी में जानकारी देना. इस श्रृंखला में जापानी व तेलगु भाषा का हिंदी में प्रारम्भिक जानकारी संस्थान की राष्ट्रीय मासिक पत्रिका *'विश्व स्नेह समाज'* के माध्यम से प्रारम्भ कर दी गई है.

कार्यःसंस्थान ने पहली बार २००४ में साहित्यकारों/पत्रकारों को सम्मानित करने का निर्णय लिया. जिसमें प्रविष्टियों के आधार पर २५ साहित्यकारों,पत्रकारों व समाजसेवियों को साहित्य मेला-०४, ३० साहित्यकारों, पत्रकारों व समाजसेवियों को द्वितीय साहित्य मेला-०५ में, ४१ साहित्यकारों, पत्रकारों व समाज सेवियों को तृतीय साहित्य मेला-०६में सम्मानित किया गया. जून २००४ में *'निषाद उन्नत संदेश'* का प्रकाशन चौधरी परशुराम निषाद के सहयोग से किया गया.

डॉ0 राज बुद्धिराजा के 70वें जन्म दिवस पर

अभिनन्दन-पत्र

रचती है प्रकृति युगों में ही, ऐसी विभूतियॉ धरती पर,
जिनके कृतित्व की कर पाता, खुद वक़्त न प्रतियॉ धरती पर,
हाँ, राज बुद्धिराजा जैसी, हों तो हों छवियाँ धरती पर,
पर क्या रच सकती हैं वे भी, उनकी सी कृतियाँ धरती पर।

भाषाएँ सारी दुनिया की जिसका अभिवादन करती है,
सान्निध्य मात्र पाने को ही छात्राएँ अध्ययन करती है,
सूरज की किरणें अंबर से जिसका नित बंदन करती हैं,
ऐसी विदुषियाँ धरातल की मिट्टी को कंचन करती हैं।

जीवनियाँ एवं शब्दकोष, यात्रावृतांत, संस्मरण दिये,
अनुवाद, समीक्षाएँ, नाटक, कविता के सारे चरण दिये,
सच उपन्यास देकर जिसने नूतन समाज के सपन दिये,
बच्चो के हेतु लिखा ऐसा, उनको सुन्दर आचरण दिये।

जिसका कृतित्व सागर सा है, एक बूँद भला क्या दिखलाये,
जिसका व्यक्ति अमरता है, छोटा सा तन क्या जतलाये,
जिसकी पहचान विद्वता है, उसका परिचय क्या रंग लाये,
ये राज़ बुद्धि के राजा का, है कौन यहॉ जो बतलाये।

वे तो साहित्य मनीषी हैं, उनकी साधना प्रणम्य करें,
हम भी साहित्य पारिखी हैं, दोनों के कृत्य अनन्य करें,
मूल्यांकन करने की भी हम, अपनी क्षमता को गण्य करें,
आओ विदुषी का अभिनंदन करके अपने को धन्य करें।

डॉ. सिद्धनाथ कुमार

,वरिष्ठ साहित्यकार, रांची

साहित्य गौरव मानद उपाधि

कभी हारते हम दुनिया में, होते कभी विजेता है,
जीवन है एक नाटक सुन्दर, हम उसमें अभिनेता है,
इतनी बात सिद्ध करने को सिद्धनाथ जी जन्में है,
नाटककार सफल वे जितने उतने सफल प्रणेता है।
विषम परिस्थितियों को सम कर लेखन का गुर बतलाया,
बंजर धरती फूल खिलायें, ऐसा अचरज दिखलाया,
मुर्दे यहाँ जियेंगे नाटक, यह भी दावा करता है,
क्या न यहॉ है संभव जग में व्यंग विधा से जतलाया।
कविता में नाटक लिख जिसने एक पंथ दो काज किया,
और रेडियो नाट्य शिल्प में स्तुतियॉ का ब्याज लिया,
शोध, समीक्षा, अध्यापन से, निज कृतित्व का कोष भरा,
नाट्य विधा में सर्वश्रेष्ठ का पहिन सहज ही ताज लिया।
अनुवादों की बनी श्रृंखला, उर्दू आगे गण्य हुई,
उनके नाटक करे अनूदित ऐसा सोच अनन्य हुई,
पुरस्कार-सम्मानों में तो आपस में ही होड़ लगी,
उनको पुष्पाहार पहनाकर स्वयं भारती धन्य हुई।
इस साहित्य तपस्वी का तप ऐसा कुछ रंग लायेगा,
उसके नाटक मंचित करने जगत मंच बन जायेगा,
उसका अभिनंदन बंदन कर हम भी यों आश्वस्त हुए,
हिदी सेवा संस्थान यह सचमुच गौरव पायेगा।

श्री श्याम विद्यार्थी जी,

वरि०निदेशक,दुरदर्शन

साहित्य वारिधि मानद उपाधि

तुक से तुक जब प्रकृति जोड़ती, बनकर रचनाकार,
उसके भावों का कवि होता, धरती पर साकार,
वह देता संदेश जगत को लोक परलोक के,
कवि-कविता का चलता रहता यह अद्भुत व्यापार।
ऐसा कवि धरती पर आकर रचता 'आत्मज शब्द'
सहज आत्म दर्शन कर लिखता, वह अपना प्रारब्ध,
और 'आस्था के स्वर' देता, अन्तर के विश्वास से,
शब्द-शब्द से होते जिसके, नये अर्थ उपलब्ध।
ये कवि विद्यार्थी हिन्दी को देते ऐसे गीत,
जिनका है भविष्य अति उज्जवल, उज्जवल तथा अतीत,
दुनिया के दुखों को समझे, अपने ही दुख दर्द सा,
दीप जलाते चलते हैं वे भर-भर उनमें प्रीत।
कविता, संस्मरण, पत्रों से जिनका अमर कृतित्व,
स्वयं बनाता जाता उनका, तेजस्वी व्यक्तित्व,
सागर सी गहराई जिसमें, नभ सी छिपी ऊँचाई है,
ऐसे कवियों को न मिले तो, मिले किसे अमरत्व।
ऐसे रचनाकारों का जब करते हैं सम्मान,
होते बार-बार सम्मानित ये हिन्दी संस्थान,
आओ कविवर करें तुम्हारा हम अभिनंदन आज,
तुम्हें समझने को पाया है हमने नूतन ज्ञान।

संस्थान ने अप्रैल०५ में देवरिया में *'देवरिया महोत्सव'* का आयोजन किया जिसमें २१ साहित्यकारों व ११ पत्रकारों को सम्मानित किया गया. संस्थान ने युवा कवि राजेश सिंह के खण्ड काव्य *'मधुशाला की मध ुबाला'* का प्रकाशन व १५ जुलाई २००५ को विमोचन किया गया. जिसमें एक पत्रकार को *साहित्य रत्न* की उपाधि दी गई और कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया. १२ सितम्बर २००५ को *'युवा काव्य प्रतियोगिता'* का आयोजनं किया गया. जिसमें ४५ युवा कवि/कवित्रियों ने भाग लिया. इस कार्यक्रम में प्रथम, द्वितीय, तृतीय प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया व संस्थान द्वारा प्रकाशित १० कवियों के काव्य संग्रह **'सुप्रभात'** का विमोचन किया गया. मई०६ देवरिया में *'देवरिया महोत्सव'* का आयोजन किया गया. जिसमें ११ साहित्यकारों/पत्रकारों को सम्मानित किया गया. जुन०६ में *'अपराध'* खण्ड काव्य का प्रकाशन व विमोचन किया गया. संस्था

विद्यावारिधि सम्मान से सम्मानित मुंबई की डॉ. तारा सिंह

सम्मानित कुछ विद्वान

श्री हृदयेश भारद्वाज, इंदौर

डॉ.विद्याविनोद गुप्त, चाम्पा

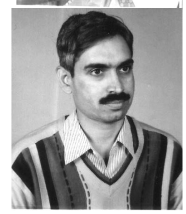

श्री अखिलेश कुमार निगम, लखनऊ

श्री देवकी नन्दन शुक्ल, पटना

श्री वंशी लाल पारस, भीलवाड़ा

श्री रामृकपाल निगम, म.प्र

श्री सुनील तनहा, छत्तीसगढ़

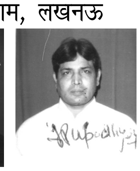

श्री दुर्गा प्रसाद उपाध याय, बलिया

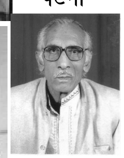

श्री सनातन कुमार वाजपेयी, म.प्र.

श्रीमती इन्दू सिन्हा, म.प्र.

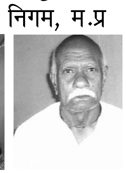

श्री अनन्त राम गुप्त, म.प्र.

श्रीमती सुनीता शर्मा, म.प्र.

श्री दुर्गा अनुराग मिश्र, उ.प्र.

चलते-चलते

साहित्य मेला–07 में संस्थान द्वारा जो मुझे स्नेह व सम्मान दिया है. उसका मैं आजन्म ऋणी रहूंगा. **डॉ.बी.पी.सिंह मुंबई**

++++++++++++++++++++++++++++++++++++

बहुत ही आकर्षक व अतुलनीय रहा साहित्य मेला. **डॉ. श्रीमती तारा सिंह,** मुबई

++++++++++++++++++++++++++++++++++++

साहित्य के इस महायज्ञ को सफलता पूर्वक सम्पन्न कराने पर आपको व आपके सहयोगियों को हार्दिक बधाई. **अखिलेश निगम,** एस.पी. लखनऊ

++++++++++++++++++++++++++++++++++++

साहित्य मेला–07 अपने आपमें एक अतुलनीय आयोजन है. इस तरह का सम्मान मुझे आज तक कहीं नहीं मिला. मैं इसे कभी नहीं भुला पाउंगा. **डॉ. ओमप्रकाश हयारण दर्द,** झांसी

++++++++++++++++++++++++++++++++++++

यह कार्यक्रम साहित्य जगत का एक यादगार कार्यक्रम था. मैं इस कार्यक्रम में शामिल हो अभिभूत हो गया. **नागेश्वर उपाध्याय,** वरिष्ठ साहित्यकार इलाहाबाद

++++++++++++++++++++++++++++++++++++

यह अपने आप में अभूतपूर्व व्यवस्थाओं से परिपूर्ण, अद्वितीय सफल साहित्यिक आयोजन था. **अरुण अग्रवाल,** प्रसिद्ध पर्यावरणविद व संपादक, अन्तर्राष्ट्रीय श्रोता समाचार, इलाहाबाद

साहित्य मेला इलाहाबाद में साहित्य जगत के लिए एक अनोखी मिसाल है. **सुरेश पाण्डेय,** इंजी. इलाहाबाद

यह देवता और दैत्य की लड़ाई हो गई है: पं. दुर्गा प्रसाद मिश्र

देवरिया जिले के बरहज विधानसभा क्षेत्र के विधायक, वर्तमान सपा सरकार में कैबिनेट मंत्री रहे व क्षेत्र का कई बार प्रतिनिधित्व कर चुके निर्दल प्रत्याशी पं. दुर्गा प्रसाद मिश्र ने हमारे प्रतिनिधि सौरभ कुमार तिवारी से एक भेट वार्ता में बताया कि चुनाव जीतने के बाद मैं बरहज के चतुर्दिक विकास के लिए सघर्ष करता रहूंगा. इसके लिए बरहज में पक्का पुल, स्थायी बस स्टेशन व रात्रि विश्रामालय की स्थापना करवाऊंगा. मैंने सरयू नदी के कटान को रोकने के लिए 45 करोड़ की योजना बनाकर सरकार को भेजी है. जनता ने पुनः मुझे अपना प्रतिनिधि बनाया तो हर आदमी के समूचित सुरक्षा व सम्मान की व्यवस्था करुंगा. आपकी लड़ाई किससे है पूछने पर कहते है– सारे लोग मुझसे लड़ रहे है. यह देवता और दैत्य की लड़ाई हो गई है. सज्जन और दुर्जन की लड़ाई हो गई है. सामान्य जीवन में सदाचारी और दुराचारी की लड़ाई हो गई है. मेरी सरलता और विकास कार्यो को देखकर लोग मुझे वोट दे रहे है. जो लोग कह रहे है कि मेरे वोटर मुझसे नाराज हो गये है वे लोग भय के कारण दुष्प्रचार कर रहे है. अगर मैं चुनाव जीता तो कैबिनेट मंत्री बनूंगा. अपने को सुरक्षित मानने के लिए मुझे वोट दीजिए.

यह पूछने पर कि बसपा प्रत्याशी रामप्रसाद जायसवाल पहले ब्राहमणों को गाली देते थे अब ब्राहमण सम्मेलन करवा रहे है? उन्होंने कहा कि रामप्रसाद ब्राहमणों की भूखा और भिखारी समझते है. वह यह समझते है कि ब्राहमणों को खिला पिलाकर वोट लिया जा सकता है.

++++++++++++++++

मौका मिला तो जनता को कभी निराश नहीं करुंगा:आदित्य

राष्ट्रीय जनता दल के विधानसभा क्षेत्र बरहज के प्रत्याशी आदित्य मल्ल ने कहा कि अगर जनता ने मुझे मौका दिया तो बरहज की रेलवे लाईन को अयोध्या तक जोड़ने, बरहज में रेलवे रेक प्वाइंट बनाना जिस पर कोयला, सीमेन्ट, खाद आएगा और हजारों लोगों को रोजगार मिलेगा, बरहज की मुख्य सड़क, देवरिया रोड, सोनूघाट से कपरवार, बरहज से भागलपुर तक डबल लेन सड़क बनाने, बरहज से मधुबन तक पक्का पूल, बरहज रेलवे स्टेशन पर रेलवे की तरफ से भोजनालय बनवाना जिससे 10–12 रुपये में भोजन मिलेगा. बरहज से छपरा तक वर्तमान ट्रेन को बढ़ाने का शीघ्र शुरू होगा, रेलवे स्टेशन की खाली जमीन को बेरोजगारों को बेरोजगारों को आंवटित करने, कम्प्यूटर आरक्षण केन्द्र की सुविधा, विधान सभा क्षेत्र के अन्दर उच्च तकनीकि विद्यालय स्थापित करेंगे. बरहज के अस्पताल को अति आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण कराने, कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना भी की जाएगी. राजनीति में आने के मकसद के बारे में पूछने पर उन्होंने बताया कि मेरा राजनीति में आने का मुख्य मकसद गरीबों की सेवा, उनके अधिकारों की लड़ाई लड़ना, समाज में बढ़ती खाई को दूर करने की कोशिश है. चुनाव में हार जीत मेरे लक्ष्य में बाधा नहीं पहुँचा सकती. आजीवन बेरोजगारों, किसानों के हक की लड़ाई लड़ता रहूँगा. राष्ट्रीय जनता दल का संकल्प है कि बरहज को मार्डन विधानसभा बनें. पेशे से इंजीनियरों, उच्च तकनीकी क्षमता का विकास के स्तर पर बरहज को तैयार करुंगा. हर कोई अपराध, काला धन, रोजगार ढूढने आया है. मैं जनता की सेवा करने आया हूँ. मैं अपनी जीत के प्रति पूरी तरह आश्वस्त हूँ. अगर मैं गरीबों के ऑसू पोछ पाया तो मेरे जीवन का सबसे सौभाग्य का समय होगा. गरीब जनता के ऊपर अत्याचार नहीं होने दूंगा. बरहज में लालटेन की रोशनी जलाकर इस युग की शुरुआत करुंगा. जनता ने अगर मौका दिया तो जनता को कभी निराश नहीं करुंगा, सारे वादे पूरे करुंगा.

ब्रह्मर्षि राधेश्याम दुबे

वरिष्ठ नागरिक, प्रमुख समाज सेवी, प्रधान सम्पादक श्याम सुदर्शन संदेश तथा संरक्षक इण्डियन प्रेस एसोशियेसन, श्री राधेश्याम दुबे का जन्म ४ जनवरी १९३५ को खानपुर, जींद, जिला-रोहतक, पंजाब में हुआ. परास्नातक, बी.एड., साहित्य रत्न करने के बाद बेसिक शिक्षा विशेषज्ञ के पद से सेवानिवृत हुए. समाज सेवा हेतु संकल्पित श्री दुबे ६ वर्ष शिक्षण सेवा, २५वर्ष विद्यालय निरीक्षण सेवा, ४वर्ष उपविद्यालय निरीक्षक, ३वर्ष राजकीय इंटर कॉलेज प्रधानाचार्य के उपरांत हिन्दी सेवा तथा स्वजन बन्धुओं की समस्याओं के समाधान में अनवरत ११ वर्षो से सेवारत हैं. आपका कर्मक्षेत्र छिवरामउ-कन्नौज, मैनपुरी, एटा, इटावा, कानपुर, उन्नाव, शाहजहॉपुर तथा देवलगढ़ पैाड़ी तथा चरखारी महोवा, हमीरपुर में राजकीय सेवा के साथ क्रियाशील समाज सेवी स्काउटिंग, भारत सेवक समाज, मित्र समाज आदि सामाजिक संगठनों में सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं. आपको को अब तक विशेष रुप से निम्न सम्मान मिले हैं- तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली, परशुराम जयन्ती पर दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित द्वारा, जिला परिषद सभागार, मथुरा में तत्कालीन सहकारिता मंत्री श्रीराम प्रकाश त्रिपाठी जी द्वारा सम्मानित, परशुराम जयंती, फरुखाबाद में माननीया प्रभा द्विवेदी मंत्री द्वारा सम्मानित, महापालिका परिषद, देहरादूर सभागार में, परशुराम मूर्ति स्थापना व ब्राहमण सभागम में माननीय अशोक बाजपेई मंत्री द्वारा सम्मानित, परशुराम जंयती कानपुर में माननीय हरिशंकर तिवारी जी द्वारा सम्मानित, इण्डियन प्रेस एसोशियेशन द्वारा प्रादेशिक लखनऊ में विशिष्टसम्मान आदि.

आपने विश्व कल्याणार्थ, जगतहितार्थ, कृत सकल्पित होकर ३ मास, अमेरिका के २२ राज्यों में भ्रमण कर भारतीय समाज से विशेष संपर्क किया तथा सुसंस्कारों हेतु प्रेरित किया. प्रवासी भारतीयों को हिन्दी में हस्ताक्षर करने तथा रामायण गीता, धार्मिक ग्रंथ पढ़ने तथा साथ ही निःशुल्क गीता प्रेस का साहित्य व देवी देवताओं की मूर्तिया वितरित की.

१९९७ से हिंदी मासिक श्याम सुदर्शन संदेश का प्रकाशन कर रहे हैं.

पर्यावरण

प्राकृतिक, भौतिक वातावरण
है पर्यावरण का अर्थ यही,
वन-सरंक्षण वृक्षारोपण से
पर्यावरण है शुद्ध सही!
इसलिए इसे न नष्ट करें
जो जीवन का सुखदाता है
है वन्य एक नैसर्गिक उपवन
जो सबको गले लगाता है।
प्राकृतिक आपदाओं से निजात
जो सदैव हमें दिलाता है
शुद्ध वायु, वर्षा से मानव
जीव-जन्तु हर्षाता है।।
हरे-भरे वृक्ष सारे
जो फल-फूल प्रदाता है
दुनियां भर को छाया प्रदान कर
स्वच्छ वायु बिखराता है।।
पर्यावरण के अभाव में
जन-जीवन पर विपदा आता है
जड़ी बूटियां, खाद्य पदार्थ
समुचित दूषित हो जाता है।
भूकम्प त्रासदी, स्खलन, बाढ़
इन सबके कारण आता है
शहरी औद्योगिक प्रदूषण से
संतुलन बिगड़ता जाता है।

अशोक कुमार गुप्त, नैनी, इलाहाबाद

क्षणिकाऐं

१. क्यों?
जलाते हो,
इस जीवन को
मॉचिस की तीली-सा
शेष रह जाने का
'खाक'।

२. रेल गाड़ी की
रफ्तार में दौड़ता
जीवन
बदलते दृश्यों की तरह
घटते घटना क्रम
छोड़ते है निशां
'प्रमाण' रुपी स्टेशन
पर ठहराव के उपरान्त।

३. प्रगति-अवनति
सुख-दुःख
के मध्य
उतराती जिन्दगी
भूले-सी।

रितेन्द्र अग्रवाल, जयपुर

कैक्टस की तरह

कैक्टस की तरह
चुभते हैं ये शब्द
नागफनी के गोल फनों की भांति
भेदते हैं
मेरे अन्तः को, मेरे मन को
दिन भर, रात भर, जीवन भर
चर-चर की आवाजें आती
जब ये शूल मर्म को भेदते ही चले जाते
देखो टप-टप खून बह रहा अब भी
और निर्लज्ज ये कॉटें
चुभते छुपते ही जा रहे
अन्दर और अन्दर

डौली अपराजिता, नैनीताल

++++++++++++++++++++++

हिमालय और हिन्दुस्तान का १४वॉ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

राष्ट्रीय हिन्दी पाक्षिक हिमालय और हिन्दुस्तान के १४वें वार्षिकोत्सव पर आयोजित दो दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया गया. प्रथम सत्र में राष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन ज्योतिष महर्षि वयोवृद्ध राणा इन्द्र सिंह की अध्यक्षता एवं प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य पं. विपिन पराशर के संचालन में हुआ. मुख्य अतिथि के रुप में अन्तर्राष्टीय ज्योतिष अनुसंधान संस्थान, भीलवाणा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पं. सीताराम त्रिपाठी ने शंखो के आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक महत्व को समझाया तथा १५० प्रकार विभिन्न अदभुत शंखों का प्रदर्शन कर उनकी उपयोगिता बताई. कालसर्प पर अपने विचार देते हुए पं. रमेश सेमवाल ने ज्योतिष एवं आयुर्वेद का चोली दामन का साथ बताते हुए कहा कि इन्हें अलग समझना बहुत कठिन है. इस अवसर पर भगवती बापू, पं. यादवेन्द्र नाथ शर्मा, पं. विपिन पराशर, हस्तरेखा विशेषज्ञ पं. आर.एस.द्विवेदी व पं. प्रतीक मिश्र ने चर्चा की.

दूसरा सत्र राष्ट्रीय आयुर्वेद सम्मेलन व जड़ी बूटियों पर रहा. जिसकी अध यक्षता आचार्य प्रभाकर मिश्र, राष्ट्रीय अध्यक्ष, आयुर्वेद परिषद, नई दिल्ली ने तथा संचालन पं. बी.डी.मिश्र ने किया. इस सम्मेलन में आयुर्वेद के विकास व शोधों पर चर्चा हुई. हिमाचल हर्बल्स ऑरगेनिक ग्रेवर एसोसिएशन के अध्यक्ष के.डी.लखनपाल, इं. एस. के. शर्मा, डी.सी. ठाकुर, बी.आर. ठाकुर, ओ.पी.शर्मा, तारसेन राणा, महर्षि आयुर्वेद प्राडक्टस लि. के डॉ० सी.एस. त्यागी, वैद्याराज गंगाधर द्विवेदी, ने आयुर्वेद पर चर्चा की.

सम्मेलन के दूसरे दिन माननीय लोकसभा में विभिन्न पार्टियों के ११० सांसदों द्वारा विचाराधीन वोटर पेंशन जिसमें प्रत्येक वोटर को रिजर्व बैंक आफॅ इण्डिया का १७५० रुपये प्रतिमाह का एटीएम कार्ड दिए जाने की मांग की है पर खुली चर्चा हुई. चर्चा में वरिष्ठ सांसद आर.पी.वर्मा, राजेन्द्र बाड़ी आदि ने भाग लिया. जिसका समर्थन सुरेश राठौर, डॉ. जसवीर आर्य, अजय पाण्डेय ने समर्थन दिया. इस अवसर पर हिमालय और हिन्दुस्तान के वार्षिक विशेषांक का विमोचन भी किया गया. कार्यक्रम में हिमलाय और हिन्दुस्तान अवार्ड से आचार्य प्रभाकर मिश्र, वैद्यराज गंगाधर द्विवेदी, डॉ. प्रेमाद वाचस्पति, वैद्य सूरज मुदगिल, वैद्य वी.एन.सिंह, कु० प्रियंका द्विवेदी, डॉ. प्रमोद वाचस्पति, डॉ. रमानंद सागर, श्यामशंकर पांडे, डॉ. के.डी.लखनपाल, डॉ.आर.एस.द्विवेदी, डॉ. उदय शंकर भगत, दीपक कुमार घोष, अनसुईया प्रसाद मलासी, हर्ष वर्द्धन वांडे, प्रेमदत्त शास्त्री, राजेन्द्र गैरोला, डॉ. जसवीर आर्य, डॉ. सी.एस. त्यागी, पं.सीताराम त्रिपाठी, राणा इन्द्र सिंह, डॉ. मायाराम उनियाल, के.बी.उनियाल प्रे़ा. डॉ. महर्षि जे. जान्हवी, पं. रमेशा सेमवाल, श्रीमती सेमवाल, श्रीमती माल श्री, डॉ. मूलवर्द्धन राजवंशी, प्रमोद वात्सल्य, अशोक शर्मा, वैज्ञानिक लाल सिंह, गिरीश चन्द्र सौंठा, इन्द्र बहादुर सेन, डॉ. नारायण दास सिंधी, स्वामी मुक्तानंद सरस्वती, फिल्म अभिनेत्री टिविन्कल शर्मा, विष्णु महाराज, डॉ. रवि कौशिक, मुकुल रस्तोगी, मनोज कुमार श्रीवास्तव, सहित विभिन्न क्षेत्र की कई अन्य विभूतियों को सम्मानित किया गया. सम्मेलन के आयोजक एवं मुख्य संयोजक डॉ. रवि रस्तोगी को अर्न्तराष्ट्रीय ज्योतिष विज्ञान शोध संस्था भीलवाड़ा द्वारा ज्योतिष भास्कर मीडिया क्षेत्र की उपाधि व सियारसिंगी उपहार, अर्न्तराष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन रुड़की द्वारा श्रेष्ठ समाज सेवी का प्रशस्ति पत्र एवं गोल्ड मैडल, वास्तुविद मुकुल रस्तोगी द्वारा मंत्रित स्फटीक श्रीयंत्र, भारतीय आयुर्वेद विकास एवं विश्व विज्ञान शोध संस्था द्वारा युगाचार्य आचार्य प्रभाकर मिश्र सम्मान २००६-७, विश्व धर्म संसद नई दिल्ली द्वारा उत्तराखंड आयुर्वेद रत्न एवं रुद्राक्ष माला से सम्मानित कर अपना शुभर्शीवाद दिया. अन्त में सम्मेलन के मुख्य संयोजक डॉ. रवि रस्तोगी ने सभी का आभार प्रकट किया. कार्यक्रम में नरेन्द्र श्रीवास्तव, ए.के. रस्तोगी, रोहिताश पवार, जे.पी.श्रीवास्तव, आदि का सराहनीय योगदान रहा.

वृक्ष

वृक्ष हमें देते हैं खाना
और खींचते पानी
बात पते की है ये मित्रों
नहीं है कोई कहॅानी
धरा है बनती शस्य-श्यामला
वृक्ष जहॉं पर उगते
वंदनवार संस्कृति के भी
हैं वहीं पर सजते
है मानव का जीवन सुरभित
और सुरक्षित वृक्ष से
हो प्रकाश से वह आलोकित
जूझ सका है तम से
वृक्ष प्रकृति का हिस्सा हैं
बनता इनसे पर्यावरण
दूर है होती अशुद्ध वायु
औ निखरता है वातावरण
करें सम्मान सदा वृक्षों का
नहीं काटें जरा पर
तभी बनेगी धरती सुन्दर
स्वर्ग बसेगा धरा पर।

डॉ० दिवाकर दिनेश गौड़,
गोधरा, गुजरात

बुरा न मानों होली है

सन् २००९ में आपकी राशि का राशिफल

मेषः वर्ष का आरम्भ आपको सुखकर प्रतीत हो रहा है किन्तु सावधान पड़ोसी की बीबी से आपका इश्क लड़ाना मंहगा पड़ सकता है. ध्यान रहे आप अपनी बीबी पर भी नजर रखिए. ऐसा न हो कि... आगे आप समझदार है. आप पड़ोसियों से आखे भी चार न करें. आपको गम्भीर नेत्र से पीड़ित होना पड़ सकता है. इश्क की गर्मी बड़ी जान लेवा सिद्ध हो सकती है. आपको इस वर्ष अप्रैल से दम का रोग हो सकता है. इसका सफल इलाज है आप अपनी पत्नी को एक वर्ष के लिए मायके भेंज दें. सम्भव हो तो आप भी ससुराल में रहें. आपके सितारे काफी प्रबल है. आपको दूकान, मकान, बाग के पुष्ट संयोग है. इसके लिए आपको महालक्ष्मी फलदायक जाप कराना होगा तथा ग्यारह उल्लुओं की बलि देनी होगी. ग्यारह दिनों के जाप के समय हर रोज अपनी पत्नी का पैर छूकर आशीर्वाद लेना होगा.

वृषः आपकी राशि साढ़े साती से प्रभावित है. यह राशि वाला व्यक्ति अपार कष्ट प्राप्त करता है. मृत्यु का भी संयोग बन सकता है. अतः वृष को प्रसन्न करने का उपाय करना चाहिए. आप 'ओम बैलाय नमः' का एक हफ्ते तक जाप कराइए. पूरे वर्ष बैल या बैलगाड़ी की सवारी कीजिए. पूरे वर्ष अपनी पत्नी से दूरी बनाए रहे. इस वर्ष आपके घर यदि कोई बच्चा जन्म लेता है तो उसका नाम बैल के नाम पर रखिए जैसे बैल प्रसाद, बैल कुमार आदि. आप बड़े भाग्यशाली है आप पड़ोसी की बीबी से आंखे चार कर सकते हैं, जरा संभल के, घबराइए नहीं आपको बाहर से कोई खतरा नहीं है. खतरा आपकी बीबी से ही है. होली का रंग पूरे घर में छिड़क दीजिए. ईश्वर चाहेगा तो सब ठीक हो जायेगा.

मिथुनः आपका वर्ष शनि व राहु परेशानी देय है. आप यदि इस परेशानी से मुक्ति चाहते है तो पूरे वर्ष शरीर के के किसी अंग का बाल न साफ करायें. जमीन पर सोये, पत्तल में एक टाइम भोजन करें. सुबह चाय की जगह मट्ठा पियें. आप स्त्री प्रसन्नम जाप करायें तथा अपनी पत्नी को प्रसन्न रखने का उपाय करें. ध्यान रहें पूरे वर्ष पत्नी का स्पर्श न करें. इस वर्ष धन आने का प्रबल संयोग बन रहा है आप चाहें तो ग्यारह सौ ब्राहमणों को सुस्वाद भोजन कराके अधिक धन का अर्जन कर सकते है. कृपया ग्यारह चौपाये जानवर के पूछ का बल, उल्लू का पंख, चमगीदड़ का नाखून, कुत्ते का दांत, एक पुटली में बांधकर कमर में बांध ले. ऐसा करने पर आपकी मन वांछित कामना पूरी हो सकती है. आपके घर के उत्तर दिशा वाले पड़ोसी की बीबी आपको छुप-छुप कर देखती रहती है. इस समय आपका संयोग प्रबल है होली खेलने के बहाने उससे मिल सकते हैं.

कर्क-यह वर्ष आपके फेवर में जा रहा है. आपके नेता बनने के प्रबल संयोग है. अतः चुनाव लड़ने की दिशा में आपको पहल प्रारम्भ कर देनी चाहिए. आप चाहे तो हिजड़ा परिषद में शामिल हो सकते है. वैसे तो आधे हिजड़े का गुण आप में है ही. आप ऊँट, बैल, सुअर का बाल, भेड़ का ऊन, नाजायज असलहों का व्यापार कर सकते है. असहलहों के कारोबार में 'ऊँ पुलिसाय नमः' अपराधी महोदयान नमः का जाप करते रहें आप हर तरह के मुसीबत से बचे रहेंगे. होशियार! आपकी तीन प्रेमिकाओं में से दो फुर्र होने को बेताब हैं. पीपल में जल चढ़ाये तथा शनिवार को शनि देव में कड़ू तेल चढ़ाए. मंगलवार को काले कुत्ते को खीर पूड़ी खिलायें. सारे अनिष्टकारी ग्रह शान्त हो जाएंगे.

सिंह-आपके करोड़पति बनने के चांस है. आप दो नम्बर का कारोबार कर सकते हैं. खबरदार राजनीति से बहुत दूर रहिए तथा अपने कारोबार से भी औरतों को दूर रखिए. आपको पेट रोग हो सकता है. इसके निवारण के लिए गुटका, शराब, बीड़ी, सिंगरेट, गांजा, भांग का सेवन फायदेमन्द सिद्ध हो सकता है. खबरदार, दूध, दही, फल, घी, मेवे, मिष्ठान से दूर रहे. आपकी कुंवारी प्रेमिका आपके बच्चे की मां बनने वाली है. इसके छुटकारे के लिए ओम चिकितसाय नमः का जाप तत्काल प्रारम्भ करा दीजिए. आपकी पतिव्रता पत्नी को आपके कारनामों का कुछ कुछ पता हो चला है. अतः उसे प्रसन्न रखने के लिए ओम जेवराय नमः एवं ओम वस्त्राय श्रृंगार प्रसाधने नमः का जाप कराइए. ईश्वर चाहेगा तो सब ठीक हो जाएगा.

कन्या-आपका यह वर्ष अच्छा प्रतीत हो रहा है. आप कन्याओं की शादी कर मुक्त हो चुके हैं और अब आपके घर बहू के रुप में कुछ कन्यायें आने की प्रतीक्षा में हैं. ध्यान रहे यदि आपने दहेज में दो पैसे भी लिए तो आपके बेटे विकलांग हो जाएंगे और आपको बवासीर या कैंसर हो सकता है. आप कई वर्ष से व्यापार और कृषि में घाटा उठा रहे हैं. अच्छा होगा आप राजनीति में कदम रखें. यह भी एक अच्छा उद्योग है. आपको सफलता मिलने का

प्रबल संयोग है. आप टिकट के लिए नेताजी को खुश रखें. इसके लिए आपको 'कामनी मंत्र' का जाप कराना पड़ेगा. शत् प्रतिशत सफलता मिलेगी. अनिष्टकारी गृहों की शान्ति के लिए एक सौ ग्यारह ब्राहमणों को भोजन कराके वस्त्रदान देना होगा. ईश्वर चाहेगा तो आप देखते देखते करोड़पति बन जाएंगे.

तुला-यह वर्ष सुख दुःख मिला जुला होगा. जिस लड़की को आप चाहते है वह आपकी पत्नी बन जायेगी और आपकी पत्नी आपके ऐव से उबकर भाग जाएगी. ऐसा संयोग बन रहा है. तुला राशि होने के कारण एक समस्या आपके साथ फंस रही है. जिस कन्या को आप चाहते है उसे आपका छोटा भाई भी चाहता है और कन्या भी उसे चाहती है. इस ग्रह को शान्त कराने के लिए प्रेम फलाय नमः का जाप कराना होगा. आपको दुश्मनों से इस वर्ष जान का खतरा है. अतः बचके रहना चाहिए. आपके मन में तरह-तरह की चिन्तायें जन्म लेंगी. चातुर्य बुद्धि से काम लें. सम्भव हो तो गधी के दूध से बनी खीर पांच गंध ो को पांच मंगलवार को खिलाए. ईश्वर चाहेगा तो सब ग्रह दूर होगें. पूरे वर्ष आप किसी बनिये से सम्पर्क न रखें तथा स्व स्त्री से दूर रहें.

वृश्चिक-यह वर्ष शुरु से ही व्यापार के लिए उत्तम है. जिना उधार मिले ले लें किन्तु उधार न दें. अच्छा होगा आप मिठाई की दूकान खोले और मिठाई बेचने के लिए किसी रुपवती कन्या को दूकान पर बैठायें. आपकी चार पहिए के वाहन का भी संयोग है. इस वर्ष आपके दुश्मनों की रीढ़ की हड्डी टूटने का प्रबल संयोग हैं. आपके बेटे को नौकरी मिलना तय हैं. आप अपने सुखद भविष्य के लिए 'सुमंलय यज्ञ' कराइए. इसके लिए एक हजार एक विच्छुओं का इन्तजाम करके उसकी आहुति करें. ईश्वर चाहेगा आपको विच्छु की तरह डंक मारने वाले सभी दुश्मन मर जाएगें और जीवन में नया सुप्रभात जागेगा.

धनु-यह वर्ष आपको आर्थिक परेशानियों में डालने वाला हैं. आप जो स्मलिंग और काला व्यापार करते हैं उसका भी बण्टाधार हो सकता है. इससे बचने के लिए आपको राजनीति में उतरना होगा. आपका बेटा एक लड़की के प्रेमजाल में फंस चुका है. लड़की गर्भवती हो चुकी है. अच्छा होगा आप खुशी से दोनों का विवाह करके उस सुन्दर कन्या को अपनी बहू बना लें और अपनी कन्या को उससे ब्याह दें जिससे वह प्यार करती है. आपको मानसिक तनाव बना रहता है. अतः मदिरा का सेवन करें. इन्कम टैक्स वाले आपके घर छापा डाल सकते हैं. अतः समय से पूर्व होशियार हो जाये और 'स्वार्थम सिद्धाय नमः' का जाप करायें.

मकर-इस वर्ष आपकी व्यापारिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी. आपके हर गलत कार्यो को आपकी पत्नी को पूरा सहयोग मिलेगा. ध्यान रहे आपके बच्चे दो नम्बर का कार्य करने में परिपक्व नहीं है. अतः उन्हें ट्रेनिंग स्कूल में भर्ती करायें. आप पर दुश्मनों का भीषण हमला हो सकता है. अतः अपनी सुरक्षा का प्रबन्ध कर दें. ध्यान रहे अपनी नाजायज कमाई का हिस्सा बिना बेईमानी किए सहयोगियों को देते रहें. आप बवासीर के रोगी हो सकते हैं. अतः हफ्ते में एक दिन गोमूत्र एक दिन मट्ठा, पांच दिन उड़द की खिचड़ी खाये तथा 'बवासीर विनाशाय' मंत्र का जाप कराये. आप अपने बेटे पर भी नजर रखिए. आजकल उसका ध्यान अपनी बड़ी साली की ओर ज्यादा ही है.

कुम्भ-इस वर्ष अर्द्धकुम्भ पड़ रहा है. अतः सब शुभ ही शुभ है. आपके सौ वर्षीय माता पिता अभी दस वर्ष और जी सकते है. इनकी लम्बी पेंशन का लाभ आप को मिलता रहेगा. आप अपने बेटे से कहिए साहित्य की दुनिया में पैर रखना उसे सूट नहीं करेगा. वह भूखो मर जायेगा. आज कल यह धन्धा फीका हो चला है. पैसा कमाने के लिए वह ज्योतिषी या मठाधीश बन जाये. आप पीलिया, फाइलेरिया, निमोनिया, गिनोरिया जैसी भयानक बीमारी के शिकार हो सकते हैं. अतः आप हर रोज पान की एक सौ चौबालिस गिलोरिया खाया करें. आप रोजाना गूलर के पेड़ में जल चढ़ाया करें आपकी मनोकामना सिद्ध होगी.

मीन-यह वर्ष आपके लिए घातक है. अतः अपनो पर भी आंख मूंद कर विश्वास न करें. पत्नी को अलग कमरे में सोने के लिए कहें चाहे तो अपने आराम के लिए अपनी छोटी साली को बुला लें. आप अपने रुपये पैसे को अपनी कमर में बांध कर रखें. आपकी पूर्व प्रेमिका आज कल पैसे-पैसे के लिए मोहताज हैं. आप उसकी मदद कर लाभ अर्जित कर सकते हैं. चाहें तो होली के दिन आमन्त्रित कर गोझा खिला कर नए सिरे से मोहब्बत की पींग बढ़ा सकते है. आपको रात रात भर नींद नहीं आती, अनाप सनाप बातें सोचते हुए रात बीत जाती है. आपकी पत्नी आपको डाट कर भगा देती है. घबराइए नहीं, आप भी बदले की कार्यवाई करें और बीबी उत्पीड़ाय विनाशाय का जाप कराइए तथा एक सौ इक्तीस सधवा स्त्रियों को भोजन कराइए. ईश्वर चाहेगा तो सब ठीक हो जायेगा.

जीवन में रंग

संजीव जिंदल

रंगों की हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक शौकिया चित्रकार के रूप में रंगों से मैं बहुत लगाव महसूस करता हूँ। संसार में हर वस्तु किसी-न-किसी रंग में रंगी हुई है। सूरज पीला है, आसमान नीला है, समन्दर हरा और नीला है तो पषु-पक्षी, पेड़ पौधे रंग-बिरंगे। कई बार तो किसी छोटी सी चिड़िया को देखकर ही हम मुग्ध हो जाते हैं कि कुदरत ने किस महान् कलाकारी से उसमें रंग संजोए हैं। इंसान कभी-कभी कुदरत के रंगों को अपने जीवन में ढालने की कोषिष करता है, लेकिन सबसे बड़ा चितेरा तो ईष्वर ही है, जिसने सर्षश्टि को असंख्य रंगों में रंगा है। कई रंगों के नाम तो प्रकषति की विभिन्न वस्तुओं के आधार पर निर्धारित किए गए हैं, जैसे आसमानी, मटमैला, नारंगी, बैंगनी, तोतई, प्याजी, कत्थई आदि। इसी प्रकार कई वस्तुओं और भावनाओं या विचारध ाराओं के नाम रंगों के आधार पर रख दिए जाते हैं। जैसे लालकिला, तिरंगा, हरितक्रान्ति, ष्वेताम्बर, ष्वेतवसना, लाल सलाम, पीलिया, भगवादल आदि।

जब हम जीवन के रंगों की बात करते है, तो हम लाल-पीले-नीले रंगों की ही बात नहीं कर रहे होते। वास्तव में रंग विविधता को प्रकट करने का सबसे बड़ा माध्यम हैं। यह विविधता स्थूल वस्तुओं की भी हो सकती है और सूक्ष्म भावनाओं की भी। हमारे जीवन में सुख-दु:ख, उतार-चढ़ाव, सफलता-असफलता के अनेक रंग भरे होते हैं। इन रंगों से हम स्वयं भी प्रभावित होते हैं और दूसरों को भी प्रभावित करते हैं। कुछ लोग वस्तुओं के बाहरी रंगों से ही उसके गुणधर्म का अनुमान लगा लेते हैं। पेड़ रंग बदलते हैं, तो हमें ऋतु के बदलने का अहसास होता है। किसी पौधे के पत्ते बेमौसम हरे से पीले रंग की ओर बढ़ रहे हैं, तो हमें उसके बीमार होने का अनुमान होता है। हरा आम कच्चा होता है तो पीला आम पका हुआ। रंगों के साथ-साथ खाने की वस्तुओं में सुगन्ध और स्वाद भी बदल जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि जीवन की विविधता में अनेक रंग समाए हुए हैं। लेकिन जिस प्रकार विविधता में एकता का भाव समाया होता है, उसी प्रकार कुदरत के तमाम रंगों के पीछे का आकर्शण हमें किसी-न-किसी रूप में आपस में जोड़ने के लिए ही है।

हम जानते हैं कि विज्ञान ने रंगों पर बहुत बड़े अनुसंधान और खोजें की हैं। विज्ञान के अनुसार सूर्य के प्रकाष में ही रंगों का संसार समाया है। बिना प्रकाष के हम रंगों का अनुमान नहीं लगा सकते। वास्तव में कोई वस्तु प्रकाष के जिस प्रभाव को लौटाने में सक्षम होती है, उस वस्तु की व्याख्या हम उस रंग में करते हैं। मूल रंग तो तीन ही हैं लाल, पीला और नीला। हालाँकि हमारे समय में रंगों के हजारों षेड्स ईजाद कर लिए गए है, पर मोटे तौर पर हम उसके मूल प्रभाव को उस रंग का नाम दे देते है। लाल रंग की सभी षेड्स को हम लाल ही कह सकते है।

आधुनिक समय में हम लोग रंगो के प्रति बहुत संवेदनषील होते जा रहे है। हालाँकि मानवजाति जातिगत आधार पर स्वयं रंगों में बहुत विविधता लिए हुए नहीं है। और कुल तीन-चार प्रकार के रंग ही पूरी दुनिया के मनुश्यों में पाए जाते है-ष्वेत, काले, गेंहुए और पीले, लेकिन दुर्भाय से पूरी दुनिया में रंगभेद के आधार पर हमने मनुश्य जाति को विभाजित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। और इस रंगभेद के आधार पर मानव जाति के इतिहास में सबसे अधिक युद्ध दर्ज हैं। सुखद तथ्य यह है कि आधुनिक वैष्विक समाज इस भेद को समझ कर इससे बाहर निकलने के प्रयास में लगा है। हम अपने दैनिक जीवन में रंगों को खास महत्व देने लगे हैं। घर की दीवारों के रंग, उन पर लगने वाले परदों केरंग, घर में रंग-बिरंगी लाइटों का प्रयोग, रंग-बिरंगी वस्तुओं की सजावट, पोषाकों में रंगों का प्रयोग न केवल हमारी मनोवषत्ति को दर्षाता है, अपितु हमारी मनोवषति में सकारात्मक परिवर्तन लाने का भी एक सषक्त माध्यम बनता जा रहा है। आजकल कलर थेरेपी के माध्यम से रंग-विषेशज्ञ लोगों की षारीरिक और मानसिक व्याधियों का उपचार भी सफलतापूर्वक करने लगे हैं। भारत में तीज-त्यौहारों पर हमारी रंग-बिरंगी संस्कषति के दर्षन तो होते ही हैं, जीवन के विभिन्न अवसरों के अनुकूल रंगों के प्रभाव को भी हमने सदियों पूर्व अपने जीवन में ढालना आरम्भ कर दिया था।

प्रकाष में समाहित ऊर्जा को रंगों के माध्यम से एकत्रित कर उसको जीवन में ढालने की युक्तियाँ यहाँ के मनीशियों ने खोज ली थी।

यहाँ हम सात रंगों के प्रभाव और जीवन में उसका प्रबन्धन किस प्रकार से हो, यह समझने की कोषिष करेंगे:

लाल रंग : ऊश्ण रंग, मूल रंग, दुनिया में सबसे अधिक प्रभावोत्पादक माना जाता है। ओज, उत्साह, षारीरिक प्रेम का प्रतीक और आधार रंग। मूलाध ार चक्र से संबंधित, सहयोगी रंग है समुद्री नील-हरा।

भगवा रंग : प्रसन्नता का रंग। स्वाधिष्ठान चक्र में संबंधित। मानसिक स्थिरता, षांति का आधार रंग। रक्त संचार का पावन षक्ति को प्रभावित करता है। सहयोगी रंग है नीला।

पीला रंग : मन की षक्तियों का रंग। एकाग्रता, तर्कसंगतता, भावनात्मकता का आधार रंग। मणीपुर चक्र से संबंधित। मोह का कम करता है। सहयोगी रंग बैगनी।

हरा रंग : प्रकषति का अपना मुख्य रंग। हीलिंग षक्ति से भरपुर। हृदय चक्र से संबंधित। षुद्धता, पवित्रता का प्रतीक। षरीर को सन्तुलन प्रदान करता है। सहयोगी रंग मर्जेंटा।

नीला रंग : षांति का प्रतीक मूल रंग। वक्तृता की षक्ति बढ़ाता है। इच्छाषक्ति को मजबूती प्रदान करता है।

विषुद्धिचक्र से संबंधित। सहयोगी रंग भगवा।

बैंगनी रंग : सकारात्मक विचारों को बल देता है।

<u>विशिष्ट सदस्यः १२५</u>

श्री शिवराम मिश्र

१५ अगस्त १९४२ को जन्में श्री शिवराम मिश्र के पिता श्री शाली ग्राम मिश्र प्राईमरी स्कूल में अध्यापक थे. १९६६ में मध्यकालीन इतिहास से परास्नातक करने के बाद २२ जून १९६७ को स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी, स्वास्थ्य विभाग, उ.प्र. में नौकरी करने लगे तथा सामुदायिक विकास केन्द्र कुंडा से ३१ अगस्त २००० को सेवानिवृत हुए. वर्तमान में प्रबंधक, कांति बालिका विद्यालय, बालिका जू. हा. स्कूल, महमुदपुर, कुंडा, के प्रबंधक है.

समर्पण-ईश्वर प्राप्ति का साधन

✍दर्शन सिंह रावत, उदयपुर, राज.

ईश्वर के पाने का सबसे सरल उपाय है 'समर्पण'. अपने अहम को पूरी तरह से मिटा देना ही समर्पण कहलाता है. अपनी आन को, अपने अहम को पूरी तरह से समाप्त कर देना ही समर्पण है.

अपने 'मैं पन' को त्याग देना कहने में तो बड़ा आसान सा लगता है, परन्तु इसे अमल में लाना उतना ही कठिन है. आदमी हर बात से मुक्त हो सकता है, हर बुराई से पिण्ड छुड़ा सकता है, किन्तु अपने 'मैं' से नहीं जुदा हो पाता, और यही मैं का त्याग किये बिना समग्र सत्य से अवगत भी नहीं हुआ जा सकता है.

ईश्वर प्राप्ति के लिए साधना का मार्ग अपनाया जाता है. साधना कार्य में सबसे बड़ा रोड़ा तो 'अहं' है. मनुष्य को स्वयं अहम के अभेद्य प्राचीर को गिराना पड़ता है, उस पर विजय पाना आवश्यक है.

समर्पण एक आंतरिक गुण है. जिसकी रोशनी में साधक अपने पराये का भेद भूल जाता है और केवल भगवद् भक्ति में 'स्वयं' को विलीन कर देता है, संसार को भूल जाता है. समर्पण करते ही उसके भीतर से एक सहज आवाज उठेगी' हे परमात्मा सब कुछ तेरा है, तेरा तुझ को समर्पित कर रहा हूँ. अब मेरा मुझ में कुछ भी नहीं है.

जब साधक का सच्चा पवित्र और पावन समर्पण होगा, तो उसे धीरे-धीरे हर तरफ परमात्मा की झलक दिखाई देने लगेगी. उसक ईश्वर मे पक्का विश्वास होता चला जायेगा. उसमें प्रेम प्यार प्राप्ति का विस्तारा होता चला जायेगा.

एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि बिना सतगुरू की कृपा के परमात्मा को नहीं पाया जा सकता और सतगुरू तभी हमें मिलते हैं, जब हम पर ईश्वर मेहरबान होता है. परमात्मा की दया, मेहर और उसकी कृपा पाने के लिए आन्तरिक समर्पण का होना बहुत जरूरी है. समर्पण के बाद साधक को कहीं जाने की जरूरत नहीं एकान्तवास की भी जरूरत नहीं, सन्यास लेने की भी जरूरत नहीं है.

समर्पण द्वारा साधक अपने परिवार, अपने घर में ही रह कर, ईश्वर भक्ति में लीन हो जाता है. उसे सहज में ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है. इसलिये कहते हैः-

लाली मेरे लाल की, जित देखू तित लाल।

लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।।

समर्पण से अहम का परदा हटते ही मन कोमल, निर्मल और सरल हो जाता है और चारों तरफ प्रेम की वर्षा होने लगती है. इससे ईश्वर प्राप्ति का मार्ग सुगम हो जाता है.

<u>सहयोगी पत्रिकाएं</u>

हिन्दी प्रचार वाणी मासिक

प्रधान संपादिकाः **सुश्री वी.एस. शाताबाई**

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, १७८, ४था, चामराज पेंट, बेगलौर- ५६००१८

साहित्य सेतु सागर मा.

संपादकः **श्री प्रभाकर शेजवाडकर**

एम-११६, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, आल्तो बेतीम, परवरी, गोवा-४०३५२१

++++++++++++++++++++++++++++++++

कोटा क्रानिकल

संपादकः **श्री अनिल सुदर्शन**

मंदिर श्री मदनमोहनजी, लाड़पुरा बाजार, कोटा-३२४००६, राजस्थान

साहित्य श्री-०८ से पुरस्कृत कहॉनी

दृष्टिकोण

हृदयेश भारद्वाज, इंदौर

यूनिवर्सिटी में समाजशास्त्र के डीन थे वे. अवस्था लगभग पचपन के आसपास. दुबला पतला बदन, हल्की-भूरी कुछ-कुछ स्थानों पर सफेदी के गुच्छे लिए खिचड़ी दाढ़ी. कांधे पर किताबों का झोला, जिसमें अनिवार्य रूप से तम्बाकू चूने की डिबिया, सुपारियां और छोटा सा सरौता. इस समय वे साक्षात् बुद्धिमंत लग रहे थे मुझे. मैं उन्हें गर्व से निहार रही थी कि ट्रेन ने सीटी दी और ट्रेन चल दी.

मेरा तीन दिनों का टूर था वह अपने गाइड के साथ. उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि मैं अपने इन्टरव्युस ठीक तरीके से ले रही हूँ. वे सूचनाओं को गहराई से निकालने का व्यावहारिक ज्ञान देना चाहते थे. वे कहते थे-

"बेटा अन्नु१ सोसॉलाजी में फील्डवर्क ही सबसे महत्वपूर्ण है. यदि फील्डवर्क अच्छा होगा, तो ही थीसिस एथेन्टीक और यूनिक होगी."

मैं कृतार्थ थी. उनके समीप्य की कल्पना भी मुझे विव्हल किये दे रही थी. ट्रेन के चलने से व्यक्ति बाहरी दुनिया से कटकर अपने डिब्बे में बिखर जाता है. मैंने देखा सीट के ठीक सामने दुबली-पतली मझोले कद की एक सामान्य रंग की परंतु खूब तीखे नाक-नक्श की लगभग सोलह-सत्रह वर्ष की कन्या बैठी थी. चुहलबाजी जैसे उसकी ऑखों और चेहरे से फिसल-फिसल कर बह रही थी. मैं बार-बार उसे देख रही थी. ईर्ष्यावश या प्रसंगवश कह नहीं सकती. बीच-बीच में मन कभी कॉलेज में भटक जाता, कभी घर, तो कभी सखी सहेलियों के पास. सच दूर जाने पर पास वाले कितने याद आते हैं.

थोड़ा वक्त यूं ही बीत गया. अचानक मेरी नजर बाहर के भागते वातावरण व उस कन्या से हटकर सर के चेहरे की ओर गई. मैं दंग रह गयी-सर उस षोडसी को एकटक घूरे जा रहे थे. उनकी दृष्टि उस बालिका की ओर गई तो लौटने का नाम ही नहीं ले रही थी. उनकी इस प्रवृत्ति को शायद वह भी अच्छी तरह समझ रही थी, इसीलिए अपनी सीट पर कसमसा रही थी. बार-बार पहलू बदल रही थी. बगल में ही उसकी मॉ तथा बड़ा भाई खर्राटे ले रहे थे. मैं सोच रही थी यदि ये जागे होते तो सर की क्या गत बनाते? मैं सर के इस व्यवहार से अचंभित रह गई. सर के बारे में मेरी सारी मान्यताएं दम तोड़ने लगी.

समाजशास्त्र का इतना प्रखर विद्वान इस पक्की उम्र का व्यक्ति यदि स्वयं ही सामाजिकता को यूं तिलांजली देने लगे तो समाज का क्या होगा? क्या सब कुछ फ्रायडमय नहीं हो जायेगा. मेरे भीतर का कोई कोना जगमगा उठा, सोचने लगी-सर अकेले हीं क्यों रहते है? ऐसे ही स्वभाव के साथ नहीं रहती होंगी वे. कभी उनकी श्रीमती पर गुस्सा आता-यदि वे साथ रहती तो क्या उन्हें ये हरकतें करने की छूट मिलती? लेकिन साथ्ज्ञ से क्या होता है-स्वभाव भी कोई चीज है. मैने पढ़ रखा है ज्ञान और विद्वता से भरा व्यक्तित्व झुक जाता है-झुकने का अर्थ पतन होना है. यह आज ज्ञात हुआ. टालस्टाय से चलकर पं. रविशंकर और अनेक फिल्मी सितारे, कलाकार एक के बाद एक मेरी नजरों से तस्वीर की तरह गुजरने लगे. कई साथियों की बातें याद आयी- ये प्रोफेसर व डीन वगैरह इसी चरित्र के होते हैं. जो लड़की इनके सम्पर्क में आई तर गई. मेरिट लिस्ट पा गई, फर्स्ट क्लास स्योर शाट होता ही है उनका. मैं इसे अपवाद मान रही थी आज तक, क्योंकि प्रत्येक स्टेण्डर्ड मैंने रैंक में किया था.

अब मुझे याद आने लगा कि क्यों सर मुझसे बार-बार री-राइट करने को कहते है तथा दूसरी स्टुडैण्ट्स का लिखा हुबहु पास कर देते है. कभी कहते है-

"इनको केवल अच्छे पति की डिग्री चाहिए. तुम टैलेन्टेड हो, इसलिए तुमसे

केशव शरण की दो ग़ज़ले

गली जाग जाती सबेरे-सबेरे
मुझे नीं आती सबेरे-सबेरे
उसे क्या पता रतजगों की कहॉनी
किरन आ जगाती सबेरे-सबेरे
मुझे एक लोरी-सी लगती है यारों
जो चिड़िया है गाती सबेरे-सबेरे
जिसे रात होना था पहलू में मेरे
वो सपनों में आती सबेरे-सबेरे
नदी के किनारें टहलना तो चाहूं
थकावट न जाती सबेरे-सबेरे।

दो

कभी ज़िन्दगी सम पे आती नहीं
है मौसम सुहाना तो साथी नहीं
भले खूबसूरत सी यादें ही हों
अकेले कोई चीज भाती नहीं
कभी भागता था हलाहल से मैं
लगी उसकी लत वो कि जाती नहीं
लहर क्या गिनूं घाट पर बैठके
कोई सुन्दरी अब नहाती नहीं
मेरा दिल ग़मों का समन्दर हुआ.
मेरी आंख क्यों छलछलाती नहीं

वाराणसी

पूरी मेहनत करवाता हूँ, ताक तुम क्रीम बन सको. तेरी सच्ची उत्तराधिकारी."

छिः ऐसा उत्तराधिकार नहीं लेना. किस बुरी नजर से घूर रहे हैं वें- वह भी एक छोटी सी कन्या को, जो शायद मुझसे भी आठ दस बरस छोटी होगी. मेरा मन अब कॉपने लगा था-कहां आ गई मैं उनके साथ, वह भी बिना गार्जियन के लड़की ने सर को लगातार घूरते जानकर अब तक पेपर अपने मुंह के सामने रख लिया था. सर अब और बेचैन हो रहे थे. दो-चार मिनट तक वे अस्थिर व बेचैन रहे, फिर उनसे रहा नहीं गया. लड़की से बोले-

"बेटी! पानी होगा तुम्हारे पास? गोलियां लेनी है मुझे."

बेटी कहते हो और एकटक घूरते हो ऐसा दोगलापन आपमें नहीं होना चाहिए सर! पानी तो मेरे पास भी था, मुझसे मांग लेते-मैंने मन ही मन कहा. मुझे सच्चा रहने व सत्य आचरण करने की शिक्षा देते रहते हो और खुद..... मैं सोचकर दुःखी हो गई. लड़की उठी. उसने बिना कुछ कहे नीचे रखे वाटरबैग से पानी निकालकर ग्लास भरा. सर इसी बीच उसके पास जा पहुँचे थे. दो गोलियॉ उसके पास थी. बोले-

"इस बुढ़ापे में गोलियों पर ही जीना पड़ता है."

हमदर्दी प्राप्त करने का यह तरीका कई फिल्मों के शाट्स की याद दिला गया. मुझे लगा ग्लास के बहाने सर अभी उसका हाथ पकड़ लेगे फिर... परन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ. सर ने शालीनता से ग्लास लिया और थोड़ी-सी गेप देकर उसके ही पास बैठ गए. अपनी एक स्टुडेन्ट के सामने ऐसी हरकतें करते हुए उन्हें शर्म आनी चाहिए. जो हरकतें युवावर्ग के लिए भी क्षम्य नहीं है, वे ये कर रहे हैं. मैं भीतर ही भीतर तिलमिला रही थी-घबरा रही थी, सोच रही थी-काश न आती. आ गई हूँ अब पता नहीं क्या होगा. क्या लौट जाना ठीक होगा? न आती तो सर की वास्तविकता तो न जानती. कम से कम उनके प्रति सम्मान तो बना रहता. जो एक स्टुडेन्ट व टीचर के बीच अनिवार्य है. क्या अब मैं सही मानसिकता से अपना पी.एच.डी का

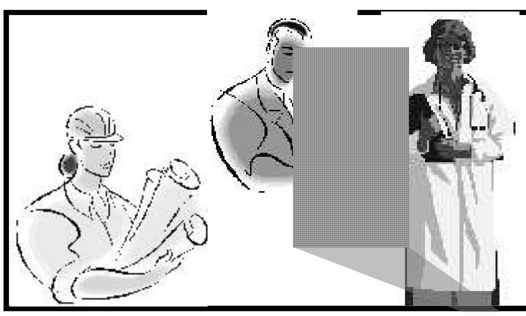

वर्क कर पाऊंगी?

मैन देखा सर उस बालिका से बात-पर-बात किए जा रहे थे. थोड़ी देर तो वह हॉ ना में उत्तर देती रही परन्तु मैंने देखा यह स्थिति थोड़ी ही देर रही फिर वे दोनों खिलखिलाकर बातें करने लगे. यही चुम्बक तो है सर के पास. मुझे ईर्ष्या भी हुई. सर ने कभी इतने प्यार से इतनी उन्मत्तता से मुझसे बातें नहीं की. मुझे सर के साथ-साथ उस लड़की पर भी गुस्सा आने लगा. सर तो सठिया गए है, पर उसे तो कुछ लाज शरम होनी चाहिए. पर वह भी क्या करे, टीन एज ऐसी ही होती है. मेरा मन विद्रोह करने लगा अचानक झटके से पुस्तक उठाकर उसे चेहरे पर ढॅक ली. सोने की लाख कोशिश की लेकिन उनके कहकहो ने जल्दी सोने न दिया, पर इस उहापोह में कब नींद लग गई, पता नहीं.

अचानक झटका सा लगा, देखा सर मुझे उठा रहे थे. मेरा नाम लेकर जोर-जोर से पुकार रहे थे. मैं घबराकर झटके से उठी. मेरी नजर पहले सामने की ओर गयी. सीट खाली पड़ी थी. मैंने सचेत होते हुए बाहर नजर डालकर पूछा-

"क्यों सर! कौनसा स्टेशन है?"

"जगेसरी"

"हमको तो बलदेवपुरा जाना है न!"

"हां लेकिन अभी यहीं उतरना है. यहां से मेरा घर केवल बीस किलोमीटर दूर है." उन्होंने उसी संयत लहजे में उत्तर दिया.

"घर से ही फ्रेश होकर निकलेगे."

मैं भयमिश्रित आश्चर्य के साथ उनके

गज़ल

आंसुओं से तर बतर वो आशिकी का दौर था.
दीवानगी थी किस कदर जबानियों का दौर था।
आइनों ने सच कहा सच के सिवा कुछ भी नहीं।
अक्श मेरे कह रहें वो दिल नशी कोई और था।
मां के हाथों की पकी वो सोंधी-सोधी रोटियां।
मॉ के प्यार से सना बो भात का जो कौर था।
लाड़ले बेटे मेरे अब हो गये जवान।
वेसखियॉ थे, जिंदगी का लड़खड़ाता दौर था।
जिंदगी तेरे उजाले मौत की स्याही से हारे
मेरा तो जीना यहॉ बस लाश के बतोर था।
बाग में मायूस था वो सुखा हुआ जो पेड़ था।
भीड़ ही में गुम गया वो आदमी कमजोर था.

महेन्द्र श्रीवास्तव, दमोह, म.प्र.

साथ उतरी. मैने सोचा जरूर उस बालिका ने इनकी कोमल भावनाओं को जगाया होगा वर्ना ये महिनों घर न जाने वाले व्यक्ति कैसे एकदम तैयार हो गए. मैंने मन पर रोक लगाते-लगाते भी कह दिया-

“लेकिन सर! अपना फिल्ड वर्क.”

“सब हो जायेगा. आओ उसकी फिक्र मत करो.”

कहते हुए वे स्वयं का सामान ढोते कदम बढ़ाने लगे. देखा दूर वही लड़की अपनी माँ व भाई के साथ चाय की दूकान पर खड़ी थी. मेरा मन अब बिल्कुल बिखरने को हो गया था.

उद्विग्नता, निराशा, क्रोध और भय की समवेत स्थिति में कब उनके साथ उनके घर जा पहुँची, पता ही नहीं चला. घंटी बजते ही उनकी श्रीमती ने दरवाजा खोला. वे आश्चर्य और खुशी के मिश्रित भाव से उछल पड़ी. मैंने औपचारिकतावश उनके चरण छुए. आंटीजी के ममत्व व स्नेह ने मुझे दस-पंद्रह मिनट में ही अपना बना लिया. सर के प्रति घृणाभाव और गहरा हो गया. ऐसी सुघड़, सुशिक्षित पत्नी के होते हुए भी सर की वे ट्रेन की हरकते अब बिल्कुल नागवार लगने लगी. पुरूष में यह भटकन कब समाप्त होगी? सोचा आंटीजी को सारी बातें बता ही दूँ. पर अवसर न मिला. थोड़ी देर बाद कालबेल बजी. आंटीजी ने कहा-“शायद नीतू आ गई.”

सर बोले-“ठहरो! मैं दरवाजा खोलकर उसे सरप्राइज देता हूँ.”

सर ने झटके से दरवाजा खोला और दरवाजे की आड़ में हो गए. नीतू गिरते-गिरते बची. मुझ अजनबी को अचानक सामने पाकर वह ठिठक सी गई थी. मैं भी भौचक्की-सी उसे देखती ही रह गई. क्योंकि यह लड़की ठीक वैसी ही थी जैसी ट्रेन वाली. वही नाक नक्श, वही रंग, बात करने का वही ढंग, केवल बदन कुछ गदराया सा. उम्र में एकाध साल का अंतर. ट्रेन वाली लड़की तुलना में ये बड़ी थी. अचानक बालक की तरह उछलकर सर ने नीतू की आँखें बंद कर दी. नीतू तत्काल चींख उठी-“ओ पापा! हाऊ स्वीट. मैं आपको ही याद कर रही थी.”

मुझे हतप्रभ देखकर सर मात्र मुस्करा दिये. बोले कुछ नहीं. उनकी मुस्कान और आंखे की निश्छल हंसी ने उस मनोवैज्ञानिक और समाजशास्त्री के मन की सारी बातें कह दी. मैं अपने आप को मन ही मन पश्चाताप की आग में जलाते हुए उनकी चरणों में गिर गयी. उन्होंने मुझे पुत्रीवत् उठाया. कहा-“बेटी अपना दृष्टिकोण हमेशा साफ रखो. पर सतर्क भी रहो. आई एम प्राउड आफ यू.”

अब मुझे लगा सर का उन्नत भाल बादलों को छूते हुए बहुत ऊपर निकल गया है और उनका कद मेरी आंखो की सीमा से कहीं ऊंचा हो गया है.

धोखेबाज

✍रामचरण यादव, बैतूल

रितु अपनी आदत से मजबूर थी. बार-बार प्रयास करने के बाद भी धोका देने की अदा को नहीं भुला पा रही थी. बचपन की बात कुछ और थी किन्तु शादी के बाद पति तथा बच्चों के साथ भी ऐसी ओछी हरकत करने से बाज नहीं आयी. आखिर उसको धोकेबाज की उपाधि मिल ही गई. घर परिवार में सुख शांति से जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा सैर सपाटा, पार्टी में जाना, फैशन करके जबरन इधर-उधर घूमना उसका शौक था. पति तथा बच्चों पर ध्यान देने के बजाय अपने फैशन व फिजूल खर्ची पर जरूरत से ज्यादा आशिक थी. हां गृहस्थ से त्रस्त होकर कोई ऐसी गलती करे तो मंजूर है मगर जानबूझ कर मस्ती में आकर यूं ही जीवन को तहस-नहस करे शोभा नहीं देता. रितु की शादी एक सभ्रान्त परिवार में हुई. पति भी सीधा-साद मिला फिर भी रितु को संतुष्टि नहीं हुई. सारी मर्यादाएँ ताक में रख बच्चों तथा पति का परित्याग कर स्वतन्त्र जीवन जीने का फैसला कर बैठी. अपने पारिवारिक बंधन से पूर्णतः मुक्त होकर वह बेलगाम घोड़ी की भांति विचरण करने लगी.

समाज की सीमाओं का उल्लघंन कर रितु अपने आप को अकेली महसूस करने लगी. हर रिश्तेदार, पड़ोसी तथा सहेलियां भी उससे कन्नी काटने लगी. रितु को अपने रुप रंग पर बड़ा घमण्ड था लेकिन शनैः शनैः वह भी ढलने लगी अब उसे कोई पसंद नहीं करता. पश्चाताप की आग में जलती हुई पूरी तरह घर चुकी कुछ सुधरने का साहस भी किया पर भाग्य ने साथ नहीं दिया. प्रभु की शरण में जाने की ठानी भजन कीर्तन के माध्यम से मन को बहलाना प्रारंभ कर दिया. ईश्वर ने सब कुछ ठीक कर दिया. किसी तरह उसने दो साल गुजारे फिर समय ने करवट बदली रितु को वही पुराने भूले बिसरे दिन याद आने लगे. कुछ हादसे भी सताने लगे ऐसे में रितु बैनी बेचैनी महसूस करने लगी. अचानक उसके जीवन में एक मुसाफिर हम सफर बनकर साथ निभाने का प्रस्ताव लेकर आया रितु ने सहज ही स्वीकार कर लिया. मालदार आसामी को पाकर वह अत्यधिक प्रसन्न थी परन्तु थोड़ समय के बाद ही उसने धोके से छल लिया और वह बेचारा अपनी राह चल दिया. धोकेबाज रितु की बेवफाई को कोसता रहा.

सफलता के छः वर्ष होने पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें. आपने इस अंक में संपादक और उनकी चुनौतियों विषय पर कुछ संपादको के विचार प्रकाशित किये हैं. सभी के विचारो में निराशा, कुंठा, असंतोष एवं असहयोग के भाव स्पष्ट दिखाई देते हैं. निश्चय ही यह गंभीर और समय जनित समस्या हैं. इसका कोई समाधान भी नज़र नहीं आता. खुद ही को इतना बुलन्द करना है कि व्यवसायिक पत्रिकायें, धनाठ्यों से मुकाबला कर पाना बड़ा मुश्किल काम हैं. मैं दिव्यलोक निकालता हूँ इसलिये उनकी पीड़ा से इत्तफाक रखता हूँ. आपने अच्छा मुद्दा उठाया. बधाई. अगली बार इस समाधान क्या हो, इस पर भी विद्वान संपादकों के विचार आमंत्रित करियेगा. सानन्द होगें.
जगदीश किंजल्क, प्रधान संपादक, दिव्यालोक, सागर, म.प्र.

++++++++++++++++++++

सर्व प्रिय पत्रिका स्नेह समाज का अंक प्राप्त हुआ. धन्यबाद. पत्रिका के साहित्य समाचार स्तंभ में पं. रामसेवक शुक्ल जी के १०१वें जन्मदिवस के अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन में मित्र आजाद कानपुरी तथा मंजुश्री प्रीति का समाचार पढ़ा अच्छा लगा. पत्रिका के सम्पादक निश्चित ही सुयोग्य है जो पत्रिका को छः वर्षो से अनवरत् प्रगति की ओर ले जाने हेतु पूरे मनोयोग से प्रयासरत हैं. इस युग में जब साप्ताहिक 'हिन्दुस्तान एवं धर्मयुग जैसी पत्रिकायें जो पूजीपतियों की थी काल कलवित हो गयी. वहाँ दिये और तूफान की कहानी की तरह आपने जो यह बौद्धिक दीप जलाये रक्खा है इसी दीप की ज्योति निरन्तर मुखर हो एवं भविष्य में मार्तण्ड की भॉति प्रखर हो मेरा आर्शीवाद सहित साधुवाद स्वीकारें.
आवरण पृष्ठ पर-

शोभित है लेखनी ललाट पर भौहनि की
मसि पात्र लोचनों में स्याही है भरी हुई!
पढ़ियें को प्रेम भाषा, मुद्रा का संकेत अर्थ
कूट ज्ञान काम-कापी, सीखता धरी हुयी।।
प्रेमी नेमी पूरन हों या कि हों अपूरन ही
पूर्ण पटु बनाने की गांरटी करी हुयी।
'सुधाकर' जू सारस, या सारस नयन हैं
मीन-मेष कौन करै, मीन सी तरी हुयी।

सुधाकर दीक्षित 'सुबोधद्व, पनकी, कानपुर

++++++++++++++++++++++

पत्रिका नियमित मिल रही है. इसके लिए आपको साधुवाद. हिन्दी के लघु, मध्यम समाचार पत्र, मासिक, साप्ताहिक व पाक्षिक पत्रों का प्रकाशन संकटमय हो गया हैं. ऐसे संकटमय अवसर पर भी आप नियमित रुप से स्नेह समाज का नियमित प्रकाशन कर रहे है इसके लिए आपको विशेष साध ुवाद. अगस्त के अंक में श्री श्याम विद्यार्थी, पर विशेष सामग्री का प्रकाशन और उनकी कविताओं का प्रकाशन भी इस अंक को महत्वपूर्ण उपलब्धि हैं. आप बधाई के पात्र हैं.
ऋषि भामचन्द्र कौशिक, हैदराबाद

++++++++++++++++++++

पत्रिका का सितम्बर अंक मिला. सम्पादकीय के माध्यम से आपने भारतीय समाज में श्राद्धकर्म के नाम पर होने वाले अनुचित कार्यो का खुलासा कर अच्छा कार्य किया हैं. श्राद्धकर्म क्या हुआ एक पिकनिक हो गया. जो जीवन भर दुखता भोगता रहा, तिरष्कृत होता रहा, उसके मरने के बाद उसी के नाम पर मौज मस्ती, क्या यह साबित नहीं करता कि हम श्राद्धकर्म के नाम पर उस मृत व्यक्ति का मजाक उड़ाते हैं, उसकी आत्मा को सुख देने के नाम पर दुखी करते हैं. भ्रष्टाचार का वास्तव में राष्ट्रीयकरण हो गया है. ठीक ही लिखा है-रिश्वतमेव जयते'. हमारे समाज में आज भ्रष्टाचार का ही बोलबाला हो गया है. क्या जनता? क्या नेता? क्या अफसर? क्या अधि ाकारी? सब के सब आकंठ भ्रष्टाचार के दलदल में डूबे हुए है तो फिर ईमानदारी खोजने में पर कहां मिलेगी? डॉ. राज बुद्धिराजा का आलेख पठनीय तो है ही संग्रहणीय भी है. कुमारी श्रद्धा एवं डॉ. एन.एस.शर्मा का आलेख भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी की दुर्दशा का सजिव चित्रण हैं. लघुकथाओं में व्यंग्य का अच्छा पुट हैं. चुटकुले भी काफी गुदगुदाने वाले हैं. पत्रिका का यह अंक साहित्य की विभिन्न विधाओं की रचनाओं को अपने अन्दर समेटे काफी अच्छा लगा.

डॉ. दिनेश प्रसाद शर्मा, भोजपुर, बिहार

+++++++++++++++++++

पत्रिका में आपने मेरा जीवन परिचय प्रकाशित किया. इसके लिए आपका आभारी हूँ. आपकी पत्रिका हिंदी की हर विधा में प्रतिष्ठापित करने सशक्त माध्यम बने, यही ईश्वर से प्रार्थना हैं.
डॉ. विजय कुमार भार्गव, अध्यक्ष, भा. भा.प्रतिष्ठापन राष्ट्रीय परिषद, नर्वी मुम्बई

++++++++++++++++++++

विश्व स्नेह समाज के विषय में संक्षिप्त सी जानकारी मिली. विस्तार से जानने समझने की आकांक्षा हैं.
कृपा होती जो दूसरी एक प्रति अवलोकनार्थ मुझ तक भेज पाते ताकि रीति नीति से परिचित होकर यथा संभव योगदान दे सकूं.
प्रो. सत्यज्ञ, सिवान, बिहार

++++++++++++++++++++

आपकी लोकप्रिय पत्रिका का दो अंक मिला. प्रेषित करने के लिए आभार. पत्रिका में सभी स्तर के पाठकों को ध्यान में रक्खा गया है. कविताएँ कुछ एक को छोड़कर सभी लचर है. डॉ. रामकुमार वर्मा की विशेष जानकारी के लिए आभार.**पं. गिरिमोहन गुरु**, होशंगाबाद, म.प्र.

++++++++++++++++++++

आपके पत्रकारिता एवं हिन्दी सेवा विशेषांक की विचार धारा जानना चाहता हूँ. कृपया इस विशेषांक का मूल्य अवगत कराने की कृपा करें. वर्तमान समय में विश्व स्नेह समाज का सदस्यता शुल्क कितना है? कोई भी अंक प्रेषित करने की कृपा करें, ताकि पत्रिका के अनुरुप रचनात्मक एवं आर्थिक सहयोग प्रदान कर सकूं. आपके बहुमूल्य विचारों सहित उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी.

घिवेन्द्र सिंह, चॉदपुर, उ.प्र.

++++++++++++++++++++++++

पत्रिका की प्रति मिल रही है. मैं स्वस्थ हूँ. कुछ आयोजनों में शामिल होने हेतु आपके पत्र मिलें. इधर अस्वस्थता तथा व्यस्तता की वजह से शामिल नहीं हो सका, क्षमा

प्रार्थी हूँ. आगामी कार्यक्रमों की सूचना आमत्रंण देते रहे. शामिल होने का पूरा प्रयास रहेगा. आप अपने कार्य लक्ष्य में सतत आगे बढ़े सफलता मिले यही हार्दिक कामना है.

डॉ. ओमप्रकाश पाण्डेय, प्राध्यापक, भक्तिनगर, सिलीगुड़ी, प.बंगाल

++++++++++++++++++++++

आपके द्वारा कृपापूर्वक प्रेषित पत्रिका का देवरिया विशेषांक मिला. यह अंक अच्छा लगा. दादाजी बनारसीदास चतुर्वेदी जनपदीय आन्दोलन को बहुत महत्व देते थे. परन्तु भीतर व्यक्तित्वों में अधिकांश राजनीतिक व्यक्ति दिखें. ले देकर एक कवि मोती. बीए. और ४-५ अध्यापक ही नजर आए. शायद अब समाज तथा जीवन में महत्व का क्रम यही हो गया है. राजनीति, व्यापार, शिक्षा, साहित्य. मोती.बीए. की पुस्तकों व प्रकाशकों की सूची भी देते तो शायद अंक का महत्व बढ़ जाता.

डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' फिरोजाबाद

++++++++++++++++++++

पत्रिका का फरवरी का अंक मिला. ध न्यबाद. अंक में दीनदयाल जी व कस्तूरबा गांधी को स्मरण किया गया है. आचार्य शंकराचार्य, मधुकर राव चौधरी, रमेश तिवारी अनजान, गायिका जायसवाल आलेख संक्षिप्त होते हुए भी व्यक्तित्व के पहलुओं को ठीक तौर से रखते हैं. रुद्राक्ष संबंधी जानकारी उपयोगी है. अज्ञान ही दुःख का मूल है सारगर्भित हैं. डॉ. राजकुमारी शर्मा राज का व्यक्तित्व व ग़ज़ल प्रेरक हैं. व्यंग्य ध्यान खीचता है. अंक की अन्य जानकारी व समाचार भी ज्ञानबर्द्धक है. अच्छी पत्रिका हेतु बधाई स्वीकार कीजिए. सहयोग हेतु निम्न पंक्तियां प्रेषित है-

जिन्दगी ईश्वर की एक नियामक है
जो जाने कितने सुकर्मो के बाद मिली है,सावधान और सचेत बने रहकर
दूसरों की सेवा कर उसे सार्थक करिए.
मेहनत की कमाई पर विश्वास कीजिए,
यदि मान चाहते है तो दूसरो का मान रखना न भूलिए.

मदन मोहन वर्मा, ग्वालियर, म.प्र.

+++++++++++++++++++++

जीवन के आंगन में हर दिन
खुशियों के नव दीप जलें
जीवन पथ पर सदा आपके
सुख के सुरभित सुमन खिलें.

सुगन चन्द्र जैन नलिन, गुना, म.प्र.

++++++++++++++++++++

पत्रिका में विवरण व जानकारी सराहनीय हैं. ७ जून को हिन्दूस्तान आजाद हो गया, जंग आजादी का मूल गवाह नीम का पेड़, बच्चों मे जागरुकता लाएगी, बाकी जानकारी लाभदायक हैं. मैं पत्रिका का भविष्य उज्जवल देखना चाहता हूँ. कठिनाइयां आवेगी आगे बढ़ते जाइये, हिम्मत न हारिये, वक्त साथ देगा, कलम की धार न टूटे. समय होत बलवान, लक्ष्मी का आभार. कामयाबी पैर चुमेंगी.

खत्री पन्नालाल, काका जी, महात्मा गांध ी मार्ग, इलाहाबाद

+++++++++++++++++++++

विश्व स्नेह समाज का अंक प्राप्त हुआ. हार्दिक धन्यबाद. इसमें प्रकाशित श्री रोहित यादव की लघुकथा- आधुनिक' समाज की वर्तमान स्थिति को चित्रित करती है. यह एक अच्छी रचना है. इसके साथ ही डॉ. मोहन आनन्द का गीत एवं श्रीमती सपना गोस्वामी का 'युवा पीढ़ी और देश भक्ति की भावना एक विचारोत्तेजक एवं उद्देश्यपूर्ण लेख है. पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक बधाईया. सद्भावनाओ सहित.

डॉ. विनय मालवीय, मालवीय नगर, इलाहाबाद

++++++++++++++++++++

आपने अपने संपादकीय में 'श्राद्ध कर्म कितना सच कितना झूठ' में सही मुद्दा उठाया है. यदि हम अपने बड़े बुजुर्गो का आदर, सम्मान व उनकी उचित देख भाल करें तो कुछ करने की जरुरत नहीं हैं. परन्तु न जाने क्यों हम अपने इस कर्तव्य को निबाहने में असफल हो रहे हैं.

महादेवी वर्मा का गद्य शिल्प-डॉ. राज बुद्धिराजा तथा नारी के बदलते संदर्भ व हिन्दी कथा साहित्य-डॉ.वीरेन्द्र सिहं यादव लेख अच्छे लगे. महादेवी वर्मा के गद्य पक्ष की कम ही चर्चा हुई हैं. राष्ट्रभाषा हिन्दी का हाल-राजीव नामदेव के लिए हम स्वयं भी कम जिम्मेदार नही है. अपने व्यक्तिगत कार्यो को हिन्दी में करने से कौन रोकता है. दिल्ली पर तो पूरी तरह अंगरेजी का रंग चढ़ चुका हैं क्योंकि वर्तमान मध्य वर्ग येन केन प्रकारेण विदेश जाने को लालायित हैं. इसलिए हिन्दी माध्यम की बात उसे तथा उसके अभिभावकों को बुरी लगती हैं.

भीमबली वर्मा, श्रेष्ठ विहार, दिल्ली

+++++++++++++++++++++++++++++

पत्रिका का नवम्बर अंक मिला. जिसमें आपने भगवद्दर्शन के बारे में सूचना प्रकाशित की है. गीता के दिव्यज्ञान के प्रसार कार्य में आपके सहयोग के लिए हम आभारी हैं. आशा है भविष्य में भी आपका सहयोग हमें प्राप्त होगा.

प्रो. महेन्द्र जोशी, गोपाल नगर

++++++++++++++++++++++

पत्रिका का वर्ष ६ अंक१ पढ़कर प्रसन्नता हुई. इसका आदोपान्त पाठन कर इसके कलेवर में समाहित विविधता, रचनात्मकता से प्रभावित हुआ. श्याम विद्यार्थी जी का संदेश उत्साहबर्धक व महाविदुषी हिन्दी व जापानी लेखिता डॉ. श्रीमती राज द्वारा जापानी भाषा के शिक्षण पर आधारित स्तम्भ की आपकी योजना उपयोगी तथा स्वागत योग्य हैं.

पं. मुकेश चतुर्वेदी, सागर, म.प्र.

++++++++++++++++++++

पत्रिका के छह वर्ष पूरे होने पर बधाई. सम्पादकीय सटीक हैं. कहॉनी, लघुकथा, लेख, ग़ज़लें, कविता सभी कुछ अच्छा हैं. थोड़ा कागज पर ध्यान देने की आवश्यकता हैं. आशा है भविष्य में भी आपका स्नेह, आर्शीवाद व मार्गदर्शन मिलता रहेगा. **संजय कुमार चतुर्वेदी,** प्रदीप, निमचेनी, खीरी, उ.प्र.

++++++++++++++++++++

पत्रिका का अंक प्राप्त हुआ. पत्रिका रोचक तथा आकर्षक है. कविताएं तथा आलोख उत्कृष्ट हैं. आपका संपादन स्तरीय हैं. स्व.

डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय के दो गीत

विरह गीत मत गाओ साथी

विरह गीत मत गाओ साथी, नयन हमारे बरस पड़ेगें।
तुमने ऐसा दर्द सुनाया, कांप गयी यह मेरी काया।
अपनी भी तो यही दशा है, कुहरा कष्टों का है छाया।।
अब मत और सुनाओ साथी, ऑसूं रोके से न रुकेंगे।
विरह गीत मत गाओ साथी, नयन हमारे बरस पड़ेगें।
जाने कितनी रातें बीती, और दिनों का किया न लेखा।
जीवन भर था आस लगाये, फिर भी सुख का सूर्य न देखा।।
मत घावों का घटा उठाओ, धैर्य बांध सब टूट पड़ेगें।
विरह गीत मत गाओ साथी, नयन हमारे बरस पड़ेगें।
मेरी तेरी कथा एक है, फिर क्यों बीती दुहराते हो।
अरे बात तो सुनो हमारी, क्यों कर विनती ठुकराते हो।
जग में दर्द न बांटो साथी, अपने ही सब हंसी करेंगे।
विरह गीत मत गाओ साथी, नयन हमारे बरस पड़ेगें।
कैसे हो विश्वास किसी का, किस पर अपनी आस लगाये।
अपना जीवन जियें स्वयं ही, खुद ही अपनी लाश उठायें।
अब मत देर लगाओ साथी, चलो कहीं हम और चलेंगें।
विरह गीत मत गाओ साथी, नयन हमारे बरस पड़ेगें।

जीवन जलाया होम सा

उम्र भर विश्वास को मैने गलाया मोम सा।
और यह जीवन सदा मैंने जलाया होम सा।।
अर्चना अपनी लुटाकर उपहास में पीता रहा।
मुस्कान दे दी आपको परिहास में जीता रहा।।
स्वतः कुंठित धैर्य को मैंने बढ़ाया व्योम सा।
और यह जीवन सदा मैंने जलाया होमा सा।
वर्चस्व मैं देता रहा हूँ आपके अभिलाष को।
सर्वस्व मैं खोता रहा, स्वयं के उल्लास को।।
क्रोध की विष प्यालियॉ मैंने पिया है सोम सा।
और यह जीवन सदा मैंने जलाया होम सा।
निर्मूल भ्रम में आपने क्यों तोड़ दी आस्था हमारी।
बिना विचारे ही आपने क्यो मोड़ दी गाथा हमारी।।
पूर्ण था जो रिक्त है अब नील नीदर व्योम सा
और यह जीवन सदा मैंने जलाया होम सा।।

अर्थ पूर्ण नवीन दोहे

१. नेकी कर भूलो सदा, बॉटों इतना प्यार।
वर्षा हो हर नैन से, छूटे जब संसार।
२. दुनिया में क्यों डूबते, देगी तुझे डुबोय।
करनी कुछ ऐसी करो, दुआ करें हर कोय।।
३. बंध कर अर्थी चल दिये, फूॅक दिये श्मसान।
कुछ तो ऐसा कर चलो, बनी रहे पहिचान।।
४. देख जनाजा सब कहें, मिथ्या सब संसार।
मुड़ते ही सब भूलते, याद रहे घर-बार।
५. धोखा दे चोरी करें, मन्दिर जोड़े हाथ।
मूरख समझा क्या उसे? देगा तेरा साथ।।
६. संगत कीजै साधु की, देती मैल निकाल।
निर्मल मन में हरि बसैं, दरस मिले तत्काल।।
७. धनवानों की कोठियॉ, दीखें भव्य विशाल।
दीन-हीन को चूसतें, होता नहीं मलाल।।
८.महलों में जो रह रहे, समझे कैसे दर्द।
तपन न देखी धूप की, देखी रात न सर्द।।

वी.के.अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.

रामकुमार वर्मा पर पर्याप्त सामग्री पढ़ने को मिली. लघुकथाओं को छोड़कर कहॅानियों का अभाव हैं. अन्त में यही कहूंगा-
सात्विक सारे लोग हो, रहे धर्म का राज।
प्रेम दया सद्भावना, लाए स्नेह समाज।
रामअभिलाष शुक्ल, बेनीगंज, फैजाबाद

++++++++++++++++++++++

महोदय, आप द्वार प्रेषित विश्व स्नेह समाज का दिसम्बर ०६ अंक मिला. अच्छा लगा. साधारण सरल परन्तु रोचक एवम् पठनीय. एक कड़वा सच आलेख प्रमोद महाजन की हत्या संभोग से समाधि तक पढ़कर रोंगटे खड़े हो गये. कैसे कैसे गिर जाते है लोग? और दूसरों को भाषण देते है नैतिकता, सदाचरण का. डॉ. उपेन्द्र प्रसाद जी के बारे में पढ़कर काफी कुछ जाना, समझा इतने विद्वान व्यक्तित्व के बारे में. शनि का प्रकोप पाखंड और दिखावे के ज्यादा करीब है क्योंकि शनि से ऐसा डरा दिया जाता है. .. लोग डर कर शनि की शरण में जाने को तैयार व तत्पर रहते हैं. परिणाम ठगे जाते है. कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि पत्रिका काफी रोचक है. भागीरथ प्रयास के लिए साधुवाद.**रितेन्द्र अग्रवाल,** जयपुर

++++++++++++++++++++

महोदय, आपकी पत्रिका की प्रति प्राप्त हुई. स्मरणार्थ आभारी हूँ. विश्व स्नेह समाज का आवरण पृष्ठ संपूर्ण पत्रिका कं अंतःकलेवर व सामग्री को उद्घाटित करता है. इस सारस्वत प्रयास के लिए मेरी शुभकामनाएं. साधुवाद सहित
डॉ. सर्वदानन्द द्विवेदी, उपनिदेशक राजभाषा, भारत सरकार, उन्नाव

सहयोगी पत्रिकाएं

नागरी संगम

संपादकः **डॉ० परमानन्द पांचाल**
नागरी लिपि परिषद, १६, गांधी स्मारक निधि ा, राजघाट, नई दिल्ली-११०००२

मासिक सुपर इंण्डिया

संपादकः डॉ. वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश', परियॅावा, प्रतापगढ़

जनता के विचार

संपादकः **श्री एन.आर.बंसल**
रेलवे रोड, चरखी दादरी, हरियाणा

With Best Compliment From:

Shiv Om Enterprises

233, Kandhaipur Dhoomanganj,
Allahabad.

Contact for all of
Construction work

Proporiter
Ramchandra Yadav

पत्रिका के समस्त पाठकों को हार्दिक बधाई

श्रीमती संगीता श्रीवास्तव

एडवोकेट
जनपद न्यायालय, कचेहरी,
इलाहाबाद, उ.प्र.
निवासः 5/6, शिवकुटी, तेलियरगंज,
इलाहाबाद, मो.: 9936834672

संस्कृति गोकुल

संपादक, स्नेह बाल मंच को जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई

Reco. By. U.P.Government

With Complement From :

Kishore Girls Inter College & Convent School

Nursery to Class XIIth

- Education by experienced Teachers
- Good Atomosphere For Education
- Limited Students in every Class

Manager
V.N.Sahu

Principal
Ms Savita Singh Bhadhaudaryia

Cont.: 82/102, Meera Patti, T.P. Nagar,
G.T. Road, Allahabad

हृदयाघात के विभिन्न कारण

अमरीकी हृदय रोग संगठन के अध्ययन से हृदयाघात के प्रमुख कारण जानकारी में आए हैं. वैज्ञानिक शोधकर्ताओं का कहना है कि पुरुष व महिला के हृदयघात का कारण सामान्यतया अलग-अलग होता हैं. अतिरिक्त कठोर परिश्रम पुरुषों के हृदयाघात का कारण बताया गया है जबकि इसके विपरित महिलाओं के हार्ट फेल का कारण मनोवैज्ञानिक दबाव अर्थात् मानसिक असंतुलन बताया गया हैं. महिलाएँ दैहिक कठोर श्रम जनित कार्यो के मुकाबले संवेदनात्मक तत्वों के हावी होने पर अधिक हृदयाघात की चपेट में आती है. हृदयाघात उस समय होता है जब हृदय की विद्युतीय तंरगे तीव्र व अनियमित हो जाती हैं. ऐसा होने पर हार्ट काम करना बंद कर देता है और मनुष्य प्राणहीन होने लगता है. ऐसी अवस्था में जीवन की क्रियाशीलता को बनाए रखने के लिए मरीज को डेफिब्रिलेटर पर रखकर जीवनदान दिया जाता है. सामान्यतया हृदयाघात का प्रमुख कारण मानसिक अंसतुलन है. तनाव, चिंता, पारिवारिक कलह, राग द्वेष, तलाक, परिजनों का विछोह आदि के उत्पन्न होने पर तथा उपरोक्त भावनाओं के तीव्र होने पर हृदयाघात की संभावना और बढ़ जाती हैं. जो व्यक्ति किसी भी कारणवश हार्ट फेल संबंधित बीमारियों से ग्रसित है उसके अंदर मनोवेग तथा सुख-दुःख का आवेश बढ़ने पर हार्ट की विद्युतीय तंरगो में गति, प्रवाह व अंसतुलन बढ़ जाता है और ऐसी अवस्था दिल का दौरा बढ़ने पर रोगी के जीवन को बनाए रखना कठिन हीं नहीं बल्कि असंभव हो जाता है.

अधिकांशतः हार्ट फेल होने का प्रमुख कारण मानसिक चिंता, क्रोध, ईर्ष्या, राग-द्वेष, पारिवारिक कलह आदि

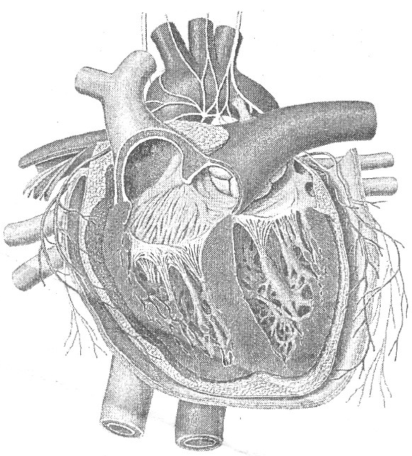

मानव शरीर में हार्ट की संरचना

मनोवृत्तियां हैं. मन एक सूक्ष्म तत्व है जो शरीर के साथ अदृश्य रुप में जुड़ा रहता है. मनुष्य प्रतिपल विभिन्न कार्यो में मन की विविध गतिविधियों का अनुभव करता है. मानसिक अंसतुलन उसी समय प्रकट होता है जब शरीर और मन के बीच दूरी होती है. जब मन की एक्राग्ता शरीर से हटकर बाहर की तरफ केन्द्रित होती है, उस समय शरीर में अनेक प्रकार के विकारों का जन्म होता है जिससे शारीरिक व्याधियॉ तो बढ़ती ही हैं साथ ही साथ मानसिक अशांति, विचारों का अंसतुलन, राग-द्वेष की प्रवृत्ति का जन्म होता है. शरीर व मन के बीच दूरी शून्य कर देने पर शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य प्रकट होता है.

स्नेह बाल प्रतियोगिता-०२

इसमें ५ से १२ वर्ष की उम्र के बच्चों को नीचे दिए गए विषय पर चित्र बनाकर भेजना होगा. प्रथम आने वाले चित्रकार का सचित्र परिचय, द्वितीय एवं तृतीय आने वाले चित्रकार का परिचय प्रकाशित व प्रमाण पत्र दिया जाएगा.**विषय.झगड़ा मत करो**

कूपन लगाना न भूलें

प्रतिभागी का नामः...

पिता का नामः...................................कक्षाः....................

स्कूल का नामः..

पताः..

सहयोगी पत्रिकाएं

तुमुल तूफानी साप्ताहिक
सम्पादकः **श्री तुमुल विजय**
तुमुल तूफानी, बड़ा बाजार, चन्दौसी, उ०प्र०

++++++++++++++++++++

उ०प्र० मजदूर दर्पण सा०
सम्पादकः **श्री गौरीशंकर मिश्र**
सदर बाजार, शाहजहॉपुर, उ०प्र०

+++++++++++++++++++++

रामपुर समाचार हि.सा.,
संपादकः **श्री ओमकार शरणं 'ओम'**
इण्डिस्ट्रियल प्रेस,विजया बैंक के निकट (कलेक्ट्रेट के सामने)राहेराजा, रामपुर, उ०प्र०

पर्यावरण डाइजेस्ट
सम्पादकः **डॉ० खुशहाल सिंह पुरोहित,**
समन्वय-१६, पत्रकार कॉलोनी, रतलाम, म.प्र.-४५७००१

+++++++++++++++++++++

हिमालय और हिन्दुस्तान
संपादकः **डॉ० रवि रस्तोगी,**
आई.डी.पी.एल. कम्यूनिटी सेन्टर के सामने, वीरभद्र, ऋषिकेश-२४६२०२, उत्तरांचल

++++++++++++++++++++++

दिव्यलोक
संम्पादक : **श्री जगदीश किंजल्क**
सी-५, रेडियों कॉलोनी, सागर, मप्र.

राजरानी चाय

राजरानी चाय, जरा हंस दो मेरे भाय

☠ एक पति ने अपनी पत्नी से पूछा-युधिष्ठिर भी तो जुआ खेलते थे, फिर तुम मुझे क्यों रोकती हो? पत्नी ने कहा-नहीं रोकूंगी. लेकिन याद रखना कि द्रौपदी के भी पॉच पति थे.

☠ एक भिखारी ने घर में आवाज लगाई, बाबूजी रोटी मिल जाएगी. अंदर से आवाज आई, बीबी घर में नहीं है. भिखारी ने कहा-मुझे बीबी नहीं रोटी चाहिए.

☠इंग्लैड जाने से पहले पति ने पत्नि से कहा-मुझे वचन दो कि मेरे चले जाने पर तुम स्त्रियों के अलावा किसी और को घर में आने नहीं दूंगी और मैं भी इंग्लैड में ऐसा ही करुंगा.

☠ श्रोता ने संत से पूछा-'स्वामी जी, धर्मग्रंथों में लिखा है कि सिगरेट पीने से स्वर्ग में स्थान नहीं मिलता. क्या यह सत्य है?'
संत ने कहा, 'जी नहीं, सिगरेट आप जितनी ज्यादा पिएंगे, उतनी ही जल्दी स्वर्ग पहुंच जाएंगे.

☠मनोरोगी ने डॉक्टर से पूछा, 'महाशय, कई बार मुझे लगता है कि मेरे कान में कोई गुनगुना रहा है.' डॉक्टर ने कहा, 'अच्छा, ऐसा आपको कब लगता है?' मनोरोगी ने कहा, 'जब मैं कान में वॉकमैन लगाकर सुनता हूँ.

☠मेहमान ने बच्चे से कहा- वाह बेटे, तुम तो बहुत समझदार हो. अच्छा बताओ, बादल के साथ चमकने वाली और बल्व जलाने वाली बिजली में क्या अंतर हे? बच्चे ने कहा-जो बिजली बादल के साथ चमकती है, उसका बिल नहीं भरता होता.

राजा हो या रंक, सबकी पसंद राजरानी चाय

हमारे अन्य प्रोडक्टः

राजरानी सब्जी मसाले, राजरानी हल्दी, राजरानी लाल मिर्च, राजरानी सेवई, राजरानी ऑवला चूर्ण, राजरानी चटपटा, राजरानी हींग, राजरानी मीट मसाला,

निर्माताः श्री पवहारी इण्डस्ट्रीज,इलाहाबाद

चुटकुले भेजिए और पाइए राजरानी चाय के पैकेट मुफ्त

अच्छे चुटकुले भेजने वाले व्यक्ति को राजारानी चाय की तरफ से ५ किलों, २ किलों, १ किलों, ५०० ग्राम, २५० ग्राम के चाय पैकेट मुफ्त दिए जायेंगें.

सौगात द्विमासिक
सम्पादकः श्री श्याम अंकुर
हठीला भैरूजी की टेक, मंडोला नाई
बारा, राजस्थान

पाक्षिक तरकश
संपादकः श्री कुन्तल वर्मा
१०८/१७८, रामबाग, कानपुर, उप्र.

नई शिक्षा मासिक
संपादकः श्री कैलाश चतुर्वेदी
१२, उगम पथ, वानीपार्क, जयपुर-१६, राजस्थान

साहित्य सागर मासिक
संपादकः श्री कमलाकान्त सक्सेना
१०३ ए, नीलकमल काम्पलेक्स, २०५, जोन-१, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल-४६२०११, म.प्र.

विप्र पंचायत
संपादकः पं. भालचन्द्र शर्मा
१२६, शिक्षक कॉलोनी, नीमच-४१, म.प्र.

फार्म-४
(देखिये नियम-८)

हिंदी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' के संबंध में सूचना

१.	प्रकाशन स्थल	:	इलाहाबाद
२.	प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३.	मुद्रक का नाम	:	गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
	क्या भारत के नागरिक है	:	हॉ
	पता	:	२७७/४८६, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद
४.	प्रकाशक का नाम	:	गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
	क्या भारत के नागरिक है	:	हॉ
	पता	:	२७७/४८६, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद
५.	सम्पादक का नाम	:	गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
	क्या भारत के नागरिक है	:	हॉ
	पता	:	एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

६. उन सभी व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधि के साझेदार या हिस्सेदार हैं : कोई नहीं

मैं गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गए विवरण सत्य है.

दिनांकः १५.०३.२००७ गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

आज के आपधापी व तनावयुक्त जिंदगी में हास्य-व्यंग्य का अपना एक अलग ही महत्व है. यही कारण है कि गंभीर कवियों के बजाए कवि सम्मेलनों में हास्य-व्यंग्य कवियों की मांग अधिक रहती है. हालांकि हास्य-व्यंग्य के खेल में साहित्य स्तर गिरता जा रहा है. फिर भी इसकी महत्ता को कम करके नहीं आका जा सकता बशर्ते इसे प्रदूषित न किया जाए.

हास्य व्यंग्य रचनाकारों में कुछ ऐसे भी रचनाकार है जो साहित्य की गरिमा को बनाये रखते हुए सामाजिक मुद्दों को बखूबी उठा रहे हैं. अजय चतुर्वेदी कक्का उनमें से

मेरी बात सुनोगे

एक है. प्रस्तुत काव्य संग्रह मेरी बात सुनोगे कक्का जी की एक ऐसी है कृति है जो प्रदूषित नहीं है. इस पुस्तक में ६७ कविताएं संकलित है इनमें कुछ तो बहुत ही अच्छी बन पड़ी है- देखिए एक तीर कई शिकार की कुछ पंक्तियॉ-रैलियॉ

भूखों की भूख, प्यासों की प्यास
मिटा देती हैं, बड़े से बड़े
सवालों का, समाधान
हर समस्या का निदान करा देती है

'अपनी बात' में कवि ने कवियों के ऊपर बहुत ही अच्छा कटाक्ष किया है. तो 'हमारा लोकतंत्र' में कवि ने लोकतंत्र पर लिखा है-कहीं शासन की गोली

और किसान का सीना
बुर्का न पहनने पर,
कहीं नामुमकिन जीना
देश-द्रोहियों के पक्ष में
कहीं वकीलों तक की हड़ताल
हर मिनट पर हत्या,हर मिनट पर बलात्कार।।

अमेरिका पर कटाक्ष करते हुए 'वाह उस्ताद' में कवि कहता है-

वाह उस्ताद!, ये क्या कर रहे हो
मेरा दॉव मुझ पर ही, चल रहे हो?
जिस अश्वासन के सहारे
हम अपनी गाड़ी
चला रहे है
उसी से तुम मुझको, चलाओगे
इसी तरह दोस्ती निभाओगें?

'जन्म-दिन की बधाई' में बापू के सिद्धातों की तिलांजलि पर -

सर्व धर्म समभाव, तुम्हारे रामराज्य
को बड़े करीने से, दफ़नाया है
सत्ता के विकेन्द्रीकरण, की तव चाह
जनता को टुकड़े-टुकड़े में,बॉटकर निभाया है

'वाह रे बिजली' में-

तेरी ख़ातिर तड़प रहे हम,
नहीं तुम्हें परवाह। वाह रे बिजली वाह!
बिन तेरे चहुँओर अंधेरा।
घर लगता है भूतों का डेरा।
सॉस-सॉस में तू बसती है
क़सम खुदा की बिना तुम्हारे,
पत्नी भी फ़ीकी लगती है
मजनू बन कर रोज़ निहारुँ,
प्रतिपल तेरी राह, वाह रे बिजली वाह।

++++++++++++++++++++++

राजनीति में आकर चोरी अगर न करते तो क्या करते?
आप बताओ वोटर मेरे क्या हम भूखे-प्यासे मरते?

+++++++++++++++++++++

संस्कृति वही है जिसको कि बहुमत स्वीकार ले।नेता वही है पक्का जो पूरा डकार ले,
जनतंत्र में जनता की तो सरकार है वही,
जनहित में जो जनता की भी चमड़ी उतार ले।

+++++++++++++++++++++++++++

इसके अतिरिक्त 'डुप्लीकेट','नपुंसक शौर्य', 'क्यों शरमा रहे है','काव्य संग्रह का विमोचन','कब तक मौन रहोगे','मुख्य समाचार','क्यों रुठे हो?','मुक्तक', 'सरकारी नौकरी','कर लगाया जाएगा', 'कब तक', 'हॉक लेता आदमी,' जीवन क्यों सग्राम हो गया', आदि रचनाएं बहुत ही अच्छी है.

समीक्षकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
पुस्तकः मेरी बात सुनोगे
रचनाकारः अजय चतुर्वेदी 'कक्का'
संपर्कः सरिता चतुर्वेदी,बी.६६, एन.एच. ४, एन.टी.पी.सी. रिहन्द नगर, सोनभद्र, उ. प्र. **मुल्यः** १५०/-रुपये

यह कैसा त्योहार

यह कैसी होली, कैसी दीवाली, कैसा यह त्योहार
लोग घुस आए हैं एक दूजे घर लेकर तलवार
मजहब के नाम पर हो रहा है मुर्दो का कारोबार
यह कैसी होली, कैसी दीवाली कैसा यह त्योहार
पुजारी बैठा हुआ है, घात लगाकर मंदिर में
मौलवी सेवइयॉ बॉट रहा है विष के प्याले में
सतश्री अकाल के नारे संग गली, घर और गुरुद्वारे में
घर बना मुर्दो का कब्रगाह, कफन बेच रहा
दूकानदार मरघट में, यह कैसा संस्कार
यह कैसी होली, कैसी दीवाली कैसा यह त्योहार
करगिल ध्वंस हुआ, गोधरा जला, वतन हुआ बेजार
सुहागिनों का सुहाग उजड़ा, मॉ की गोंद सूनी हुई
बेटी हुई अनाथ, पिता वतन के खातिर खुद
को कर्म-यज्ञ की हवन ज्वाला में भस्म कर दिया
खून से लिपटी, अकथ कहानी, कहती है दीवार
यह कैसी होली, कैसी दीवाली कैसा यह त्योहार
बेटे का शव पिता के कंधे पर, है लदा हुआ
पिता दो कदम चलने से भी लाचार
मॉ की ऑखों में रोशनी नहीं, कैसे
देखेगी पुत्र का यह अन्तिम संस्कार
यह कैसी होली, कैसी दीवाली कैसा यह त्योहार
जो जीवित बचा, वह भी मुरझा गया ग्रीष्म की नादानी से
यह कैसी प्यास जो मिटती नहीं नयन की जलधारों से
सभी अपनी-अपनी प्यास बुझाते, एक दूजे के सीने पर, कर प्रहार
चतुर्दिक है हाहाकार, यह कैसा हो गया संसार
यह कैसी होली, कैसी दीवाली कैसा यह त्योहार

श्रीमती तारा सिंह, नवी, मुम्बई

मंच से बोलते हुए संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

मंच से बोलते हुए नव भारत टाईम्स के संपादक

डाक पंजीयन संख्याः एडी.306/2006–08 R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380

साहित्य श्री सम्मान ०७ हेतु प्रविष्टिया आमंत्रित

१. **डॉ० राज बुद्धिराजा सम्मान**(साहित्य श्री):(रु०५००१/-) एक कहॉनी तीन प्रतियों में.

२. **डॉ. रामकुमार वर्मा सम्मानः** (रु०२५००/-) एक नाटक तीन प्रतियों में

३. **बाल श्री सम्मानः**(रु०११००/-) एक बाल कहॉनी तीन प्रतियों में

४. **कैलाश गौतम सम्मानः** कोई एक हास्य/व्यंग्य कविता तीन प्रतियों में

५. **डॉ. किशोरी लाल सम्मानः** श्रृंगार रस पर आधारित एक रचना तीन प्रतियों में

६. **राजभाषा सम्मानः** यह सम्मान सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों को राजभाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिए जाएगें.

७. **समाज श्रीः** गत ५ वर्षो के सामाजिक कार्यो का सम्पूर्ण लेखा-जोखा तीन प्रतियों में

८. **सम्पादक श्रीः** पत्रिका के कोई तीन अंक तीन प्रतियों में (निःशुल्क)

९. **युवा पत्रकारिता सम्मानः** पत्रकारिता के क्षेत्र में किए गये कार्यो का सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में

१० **मानद उपाधियांः** सम्पूर्ण साहित्यिक उपलब्धियों का लेखा जोखा तीन प्रतियों में

११. **विश्व हिंदी साहित्य सेवा अंलकरणः** लेख/संस्मरण/व्यंग्य/नाटक/उपन्यास तीन प्रतियों में

विशेषः १. अपनी रचनाओं पर अपना नाम/पता न लिखें। मौलिकता के लिए केवल हस्ताक्षर करें।

२. सभी प्रविष्टियों के साथ एक पोस्ट कार्ड/एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा भेजें।

३. प्रविष्टि के साथ १००/-रुपयें का धनादेश भेजना अनिवार्य होगा. धनादेश/बैक ड्राफ्ट सचिव के नाम से ही भेजें. चेक स्वीकार्य नहीं होगें.

४. प्रविष्ट्रियों के साथ सचित्र स्वविवरणीका अवश्य भेजें. व

अंतिम तिथिः ३० नवम्बर २००८

लिखेंः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी–६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

* संस्थान का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा. किसी भी प्रकार के विवाद में न्यायालीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा. सम्मान राशियों को उपहार/नगद व कम अधिक करने का अधिकार सुरक्षित रहेगा.

Lokeh] laiknd] izdk'kd]eqnzd xksdqys'oj dqekj f}osnh }kjk Hkkx Zo izsl dk0Z dx lseqfnzr djkdj 27@486] tsy jksM] pdj?kqukFk us0 h.lsizdkf'kr fd;k-